

प्रकाशक—

पण्डित भगवदत्त वी० ए०

स्वाध्याय-मन्दन

गोहनलाल रोड, लाहोर

प्रथम संस्करण—एक हजार

मूल्य—एक रुपया

प्राक्कथन

ई वर्षों से मैं वैदिक वाङ्मय का इतिहास लिख रहा हूँ। उस के माग प्रकाशित हो चुके हैं। उस को लिखते-लिखते मैंने भारत के न इतिहास की सामग्री भी एकत्र की। भारत के इतिहास पर भी पुस्तकें आज तक प्रकाशित हुई हैं, उन में प्राचीन इतिहास छोड़ ही दिया जाना है। केवल पाजिटर और जयचन्द्र जी ने अपने ग्रन्थों में प्राचीन इतिहास लिखने का यत्न किया है। हमारे विद्यार्थी संस्कृत के पुराने ग्रन्थ या उनके अनुवाद पढ़ते हैं तो वे मान्धाता, नीप, भरत, रघु, दुष्यन्त शन्तनु आदि के नाम उनमें देखते हैं। पर धुनिक इतिहास-ग्रन्थों में इन व्यक्तियों का उल्लेख भी नहीं मिलता। इस छोटे-से इतिहास-ग्रन्थ में इस त्रुटि को दूर करने का प्रयत्न किया है।

मौर्य-काल से लेकर श्रीहर्ष के समय तक के इतिहास में बड़ी नई चीजें चुकी हैं। इतिहास के पाठ्य-ग्रन्थों में उस का भी अभाव ही है। उस खोज का भी इस ग्रन्थ में उपयोग किया है। मौर्य काल से श्रीहर्ष भारत में साम्राज्य के पीछे साम्राज्य देने, यह इस इतिहास के पढ़ने पर हो जायगा। आजकल की पाठ्य-पुस्तकों में इस काल के पन्ने नटकी उलट जाते हैं। सम्यक् इतिहास की धारा उनमें टूटी सी प्रतीत है। इस दोष को भी दूर करने का प्रयास किया गया है।

सलमानी और राजपूत इतिहास के मन्थन में गौरीशंकर हीराचन्द्र शा ने एक प्रामाणिक ग्रन्थ लिखा है। मैंने उन के ग्रन्थ से पुरा का कर राजपूत इतिहास उस के स्वच्छ रूप में लिखा है। अपनी इतिहास-ग्रन्थों में इस काल के वर्णन में मैं कई निराधार बातें लाती हूँ।

स प्रकार यह छोटी सा पुस्तक इतिहास के चम्पक-चम्पक से मैंने इतिहास की आधुनिक पाठ्य पुस्तकें का नया है और उन में कहीं सहायता ली है। आशा है इस पुस्तक के पाठ से विद्यार्थी उठावेंगे।

भाग-१

भाग ही हि
म सुगन्धि पा, ०
मन्त्र नगिरा मे ०
भूमि मंसा ० २
प्रकृति ने उमर ० २
नितनी हि अन्त ०

मीमा—०००

रत्नमाला ० २
वाटिया मरा हि ०
नरत महा मागर ०
पश्चिम म अरुण भिगा
उन मन्त्री मरा ०
जन मन्त्र्या ०
मय अरुण मन
न श नेत्रमन्त्र ०

ओम्

भारतवर्ष का इतिहास

पहला अध्याय

भारत की स्थिति—उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व में पर्वतों
न सुरजित पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में विशाल समुद्रों से घिरी हुई
नजल नदियों से बहुधा सिञ्चित वनों और खेतों से श्यामल भारत-
भूमि ससार के प्रदेशों में एक महाद्वीप का-सा स्थान रखती है।
कृति ने इसकी सीमा इतनी स्वाभाविक और सुन्दर बना दी है
जितनी कि अन्य किसी देश की दिखाई नहीं देती।

सीमा—भारत के उत्तर में गिरिराज हिमालय की लम्बी
श्रृंखला है उसकी लम्बाई १६०० मील है। उसकी ऊँची-ऊँची
चोटियाँ सदा हिम ढाँढत रहती हैं। दक्षिण में लक्षद्वीप और
नारन-मन्नार समुद्र में ब्रह्मदेश और बङ्गाल की खाड़ी तथा
पश्चिम में अरब सागर, बिलोचनान और अरब सागर हैं
इन समुद्री तटों की विस्तार लगभग ३००० मील है।

जन-संख्या और क्षेत्रफल—भारत की जनसंख्या इस
क्षेत्र में ३६५ में कोई ३५ करोड़ के लगभग है
एक का क्षेत्रफल १८०० ३५० वर्ग मील है

भारत के नाम—अत्यन्त प्राचीन काल में जब ऋग्वेद का बहुत सा भाग समुद्र रूप ही था, और सिन्ध तथा पञ्जाब के प्रदेश अभी पानी से बाहर निकले ही थे, तब आधुनिक संयुक्त प्रान्त के भाग को यहाँ के निवासी आर्यावर्त नाम से पुकारते थे। पीछे जब अनेक भूमियाँ समुद्रों से बाहर निकल आई, और उनका आकार आधुनिक भारत के कुछ समान हुआ, तब इस देश का नाम भरतखण्ड अथवा भारतवर्ष हुआ। तत्पश्चात् अनेक आर्य लोग उत्तर और दक्षिण के समूचे प्रदेश को भी आर्यावर्त कहने लगे। मुसलमान लेखक भारतवर्ष या आर्यावर्त के स्थान में इसे हिन्दुस्तान के नाम से लिखते आए हैं।

भारत के भौगोलिक विभाग—भूगोल की दृष्टि से भारत के तीन मुख्य भाग हैं—

१—हिमालय का पार्वत्य प्रदेश। इस में काश्मीर, नैपाल, आदि देश हैं। इसकी लम्बाई कोई १६०० मील और चौड़ाई १५० से २०० मील तक है। प्राचीन काल से आर्यों के अतिरिक्त यहाँ गन्धर्व, राजस, और किन्नर आदि अन्य अनेक जातियाँ भी बसती रही हैं। उनके अपने अपने राज्य भी रहे हैं। यद्यपि हिमालय की दीर्घ पर्वतमाला के कारण कोई विदेशी सुगमता से यहाँ नहीं आसकता, तथापि हिमालय में अनेक ऐसे पर्वत-द्वार या दर्रे हैं जिन के मार्ग से यहाँ के लोग बाहर जाते रहे हैं और विदेशीय लोग यहाँ आते रहे हैं।

२—उत्तरीय भारत के क्षेत्र। इनका आरम्भ है हिमालय के पार्वत्य स्थान के अन्त से और समाप्ति है विन्ध्या पर्वत पर। प्राचीन काल में यह क्षेत्र तीन उप-विभाग में बँटा हुआ था। पूर्वक भाग में कलिङ्ग या उड़ीसा, बङ्ग और

भारतार्थे वा इतिहास

ये स्त्रियों के पदों स्थानों में पाई जाती हैं । गमुंड के मोती आदि
 के रूप में व्यवहार होते हैं । यहाँ के कन्दर स्थानों में आधुनिक
 रूप के स्त्रीयों के लोभों ने भाग्य में परिवर्तन किया था । यहाँ के लोभ
 के कारण ही एक नमूना मराठा शक्ति है, जिसने १७वीं
 के अन्त में आधुनिक रूप में नये नये मराठों का मुद्रापता

महान ही जाति—१. आर्य जाति भारत में प्राचीनतम

इन भाषाओं के बोलने वाले १०० में से लगभग २१ हैं। कई लोगों का कहना है कि इन भाषाओं का मूल भी संस्कृत है। परन्तु इस विषय पर अभी बहुत खोज की आवश्यकता है।

३. मुण्ड और किरात जातियाँ—मुण्ड लोग छोटा नागपुर और छत्तीसगढ़ आदि प्रदेशों में रहते हैं और किरात आसाम आदि में। इन की दशा बड़ी असम्य है। ये १०० में से केवल ३ प्रतिशत ही हैं।

जातियों का सम्मिश्रण

बहुत पुराने काल से यहाँ जातियों का सम्मिश्रण होता रहा है। दृष्टान्तों यात्री मैगस्थनीज ने भी इस सम्मिश्रण का उल्लेख किया है। परन्तु अनेक द्राविड़ और क्षत्रिय अपनी पवित्रता को स्थिर रखते आये हैं। और क्योंकि आर्यों की ही यहाँ अधिकांश सख्या रही है अतः आर्य-संस्कृति ने अपना पूरा प्रभाव बतों पर रखा है।

दमरु अध्याय

भारत में आर्यों का इतिहास कब से आरम्भ होता है—

जब से कब तक यह इतिहास लेखक का प्रायः विचारणीय लक्षण था। समझते हैं कि भारत में आर्यों का इतिहास इस से पहले २५०० वर्ष पूर्व से आरम्भ होता है। इस से पूर्व यहाँ असम्य दशा ही बस करती थी। यहाँ से इनके जाने का अर्थ है कि वे यहाँ से निकल पड़े। परन्तु यह दूर तक बर्णन का अर्थ नहीं है कि वे यहाँ से निकल पड़े। यह दूर तक बर्णन का अर्थ नहीं है कि वे यहाँ से निकल पड़े।



प्राचीन काल से अपने इतिहास-ग्रन्थ लिखते आए हैं। अनेको आर्य राजा अपने सरस्वती भण्डारों में अपने काल का इतिहास निर्माण कराते रहते थे। घरेलु और दूसरे युद्धों के कारण इस इतिहास-सामग्री का अधिकांश नष्ट हो गया है। इसलिए जब मुसलमान इस देश में आए और उन्होंने यहाँ के इतिहास-ग्रन्थ खोजे, तो उन्हें ऐसे ग्रन्थ कम ही मिले। अतएव उन्होंने अनायास लिख दिया कि आर्य लोगों को इतिहास-कला से प्रेम नहीं था। परन्तु जैसे जैसे अब खोज बढ़ती जाती है, इतिहास के अनेक पुराने ग्रन्थों का पता लगता जाता है। पुराने इतिहास के प्रसिद्ध ग्रन्थ निम्नलिखित हैं—

१. रामायण—यद्यपि रामायण में पहले भी इतिहास के अनेक ग्रन्थ रहे होंगे, परन्तु वे अद्य मिलते नहीं। रामायण का रचयिता आदि-कवि वाल्मीकि था। उसने राम से पूर्व के अयोध्या के अनेकों प्रतापी राजाओं का उल्लेख किया है।

२. महाभारत—महाभारत में तो पुराने इतिहासों अथवा ऐतिहासिक श्रुतियों का बहुत ही उल्लेख है। इसकी रचना का अंश सब शास्त्र निष्णात कृष्ण द्वैपायन भगवान् व्यास को है। अर्थात् और अपने काल का इतना सजीव इतिहास नसार भर का कोई दूसरा विद्वान् शक्य नव नही लिख सका।

[illegible]

४. नीलमत पुराण और राजतरंगिणी—काश्मीर-सम्बन्धी पुरातन इतिहास के ये दो ग्रन्थ-रत्न अब मुद्रित हो चुके हैं। इन में पुराने इतिहास की बड़ी उपयुक्त सामग्री है।

५. आर्यमञ्जुश्रीमूलकल्प—यह एक बौद्ध ग्रन्थ है और इस में एक सहस्र श्लोक केवल शुद्ध इतिहास-परक हैं। महात्मा बुद्ध के काल से लेकर ईसा की नवम शताब्दी तक का प्रामाणिक इतिहास इस ग्रन्थ में मिल गया है।

इसी प्रकार के अनेक इतिहास आसाम, राजस्थान आदि स्थानों से मिल रहे हैं।

शिलालेख और सिक्के—इन ग्रन्थों के अतिरिक्त पुराने शिलालेख और सिक्के भारत तथा विदेशों में एकत्र किए गए हैं, और अब भी एकत्र हो रहे हैं। लाहौर के अर्द्धुतालय में ऐसे सिक्कों की एक बड़ी राशि है। इन से भी इतिहास पर बड़ा प्रकाश पड़ा है।

पुराने संस्कृत ग्रन्थों के पढ़ने में पता लगता है कि महाभारत में भी बहुत प्रवृत्तियों के राजा अपने शिलालेख स्थापित कराया करते थे। वे शिलालेख अभी मिल नहीं पर प्रचलित होता है कि विरहाल राजा ने जब उत्तर प्रदेश में गया में गया तो उन्होंने जितना प्राचीन गुफा का पत्थर अपना आज्ञा दे दिया था। उस गुफा में उन्होंने अपने नाम का स्तूप बनवाया।

विदेशी यात्रियों के यात्रा-विवरण—१. पुनानी यात्री
यह यात्री भारत में आकर भारत का भ्रमण कर रहे थे।
तैमूर लंग ने भारत का भ्रमण करके भारत का भ्रमण करने में
समय बतलाया था।
यह यात्री भारत में आकर भारत का भ्रमण कर रहे थे।

२. चीनी यात्री—इन में से तीन बहुत प्रसिद्ध हैं, अर्थात् फाह्यान, युवन च्चङ्ग या ह्युनसांग और इत्सिंग ।

३. मुसलमान यात्री—मदने पुराने मुसलमान यात्री मुलेमान नौशाहर का ग्रन्थ अब हिन्दी में भी मिलता है। उनके पदवान् इतिहास अल्लामाजी का बहुत ग्रन्थ इतिहास का एक रत्न है।

४. ईमाई रात्री—इन मे मनोचो और दरनियर प्रादि के नाम स्मरणीय हैं ।

आर्यों का निवासस्थान—जिन मूल आर्य जाति का अद्भुत भारत के आर्य हैं उसी जाति का अद्भुत योरोप के आधुनिक अद्भुत, फ्रेंच और जर्मन आदि लोग हैं। कई विद्वानों का कहना है कि वह मूल आर्य जाति कभी मध्य एशिया में वास करती थी। परन्तु दूसरे विद्वानों को यह धारणा है कि इस विषय में निश्चय में कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि भारत में आर्य लोग उत्पन्न प्राचीन काल से ही रहे आते हैं। परलोकगत भारतीय विद्वान दात गङ्गाधर तिलक का मत है कि आर्य जाति का मूल स्थान उत्तरीय यूरेशिया में वह समार के अन्य स्थानों में फैली

तीसरा अध्याय

इति कथा

आवृत्ति—

[illegible]

1. What is the purpose of the study?

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

शासन—वैदिक काल में समूचा भारतवर्ष छोटे छोटे राज्यों में विभक्त था। प्रजा को राज्य में बहुत अधिकार प्राप्त थे। सब विशेष समर्थों पर सभा विशेषों में प्रजा की सम्मति ली जाती थी। बड़े बड़े विद्वान् आकर उन सभाओं में व्याख्यान देते थे। इन सभाओं में बोलने के लिए वक्ता होना एक बड़ा गुण माना जाता था। इस लिए राजा लोग भी इस गुण के लिए अभ्यास करते थे। राम और कृष्ण में वक्ता-शक्ति अलौकिक थी। प्रजा को अप्रसन्न करके कोई राजा राज्य नहीं कर सकता था।

वैदिक धर्म—आर्य लोग वेदों के धर्म को मानते थे। वेदों का धर्म उच्च सरल, और बड़ा पवित्र है। एक ईश्वर की पूजा सर्वत्र पाई जाती है। हाँ कई लोग देवता के रूप में भी ईश्वर की पूजा करते थे। वे अपने मृतकों को जलाते थे। उनका पुनर्जन्म में विश्वास था। दान उनके धर्म का एक प्रधान अङ्ग था। पाँच महायज्ञों पर बड़ा बल दिया जाता था। बालक गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने थे। ऋषियों और ब्राह्मणों का बड़ा मान था।

आर्थिक और सामाजिक दशा—ब्राह्मण को धन की आवश्यकता नहीं थी पर आवश्यकता पड़ने पर राजा और धनवान लोग उनके सब काम पूर कर देते थे। क्षत्रिय और राजा लोग धन-वस्तु में दयावाने थे। अनेक राज्यों ने अपने यज्ञों में अग्नितप्त सेना दान किया। वेदों को सदा और परदेश में वितरित करके धन का बन्धन रहने से किसी भी को अपने छोटे भग पर राज्य का अधिकार नहीं था। उनके राजाओं की आवश्यकता के अनुसार धनमित्र जाना था। इस प्रकार सब धन-वस्तु धनवानों के धन में व्यय करने थे।

चोरी का अभाव था। स्त्रियों का स्थान यद्यपि नगर में था, पर था बड़ा ऊँचा। प्रायः नगर और नगरिया गामगण पहनते थे। उनके वस्त्र बड़े सुन्दर होते थे। आर्यों के नगर बड़े स्वच्छ और शोभायुक्त होते थे। उन में नृप का जाना आवश्यक समझा जाता था। राज-प्रासादों का सौन्दर्य तो असाधारण था। आर्य-विद्या के रत्नक पुरोहितों का बड़ा मान था। आर्यों का जीवन था बड़ा सगल। आजकल के समान कुटिलता, कलह और धनाभाव में भी ऐश्वर्य भोगने की उच्छ्रा उन में कदापि नहीं। पूर्ण ऐश्वर्य में रहते हुए भी उन में त्याग-भान अधिक था। तभी तो अनेक राजा लोग यज्ञों के अंत में बहुधा अपना सारा धन बाँट दिया करते थे।

चौथा अध्याय

राजनीतिक इतिहास का आरम्भ

मनु — मनु प्रथम आर्य राजा था। अयोध्या नगरी उसी की आज्ञा से बनी थी। वह ही सब वर्मशाला का प्रथम निर्माता था। मनु के वंश में अनेक राज-कुलों की उत्पत्ति हुई है। अयोध्या का प्रसिद्ध इक्ष्वाकु वंश मनु के ही उत्तराधिकारियों में से था। इक्ष्वाकु वंश का प्राचीन इतिहास अब भी बहुत मिलता है।

इक्ष्वाकु वंश — महाराज इक्ष्वाकु ने कामल देश में अपना राज्य स्थापित किया। मृन्ड नगरी अयाया का उसने अपनी राजधानी बनाया। वह एक दत्तार्थी राजा था। भारतीय इतिहास में इक्ष्वाकु का कल ही सर्ववश के नाम से प्रसिद्ध है।

मान्धाता — इक्ष्वाकु की कुल में उसका पुत्र भीम भीम पश्चात्

मान्धाता नाम का एक दिग्विजयी राजा हुआ। उसने अगार मन्त वृद्धय आदि अनेक राजाओं को पराजित किया। पुराणे ग्रन्थों में कहा है कि—'जहाँ से मृत्यु उद्भव होता है और जहाँ जाकर अस्त होता है वह सारा देश युवनाश्व के पुत्र मान्धाता के राज्य में है।'

मगर—मान्यता के कुछ पीढ़ी पश्चात् अयोध्या की राज-
धानी पर सगर नामक राजा हुआ। उसकी गिनती भी चक्रवर्ती
अर्थात् निर्वजयी राजाओं में है। इसका बड़ा पुत्र अन्नमज्जन था।
प्रजा पर अन्याचार करने के कारण वह राज्य का अधिकारी न
बन सका। फिर उसके पुत्र अहमान को राजतिलक मिला।

[illegible]

दानार्थी नाम - राजा क प्रसन्न मन्त्रालय से एक सहायक
मन्त्रालय के रूप में नियुक्त किया गया था। यह सहायक मन्त्रालय
नियुक्त करने के लिए राजा को राजा के पास रहना पड़ा था।
राजा के पास रहने के दौरान राजा ने अपने सहायक मन्त्रालय
के साथ-साथ अपने सहायक मन्त्रालय के साथ भी काम किया।
राजा के पास रहने के दौरान राजा ने अपने सहायक मन्त्रालय
के साथ-साथ अपने सहायक मन्त्रालय के साथ भी काम किया।

राम का इतिहास—दिलीप और रघु के कुछ काल पश्चान
 कौसल के अधिपति महाराज दशरथ थे। उनकी तीन रानियाँ थी,
 कौसल्या, कैकेयी और सुमित्रा। इनके चार पुत्र थे। कौसल्या
 के राम, कैकेयी के भरत और सुमित्रा के लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न।
 भारत में विश्वामित्र नाम के अनेक ऋषि हो चुके हैं। महाराज
 दशरथ के काल में भी एक विश्वामित्र थे। वे एक यज्ञ करते थे।
 अनार्य राक्षस उनके यज्ञ का नाश कर देते थे। विश्वामित्र जी ने
 दशरथ से उनके पुत्र राम और लक्ष्मण माँगे ताकि वे उनके यज्ञ
 की रक्षा करें। अनिच्छा होते हुए भी महाराज ने ऋषि का वचन
 शिरोधार्य किया। राम और लक्ष्मण के कारण विश्वामित्र का यज्ञ
 सफल होगया। विश्वामित्र स्वयं एक क्षत्रिय-कुल से थे। वे
 युद्ध-विद्या-विशारद और परम अस्त्रवेत्ता थे। यज्ञ की समाप्ति
 पर उन्होंने राम और लक्ष्मण को अनेक अस्त्र दिए।

उन्हीं दिनों मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की परम
 रूपवती कन्या सीता का स्वयंवर था। विश्वामित्र जी राम और
 लक्ष्मण को लेकर जनकपुरी में पहुँचे। सीरध्वज की प्रतिज्ञा थी
 कि जो कोई उसमें पास गये हुए शिव वनुष को तांडेगा, वह
 सीता का पति होगा। स्वयंवर स्थल में अनेक क्षत्रिय राज
 पण्डित व
 सम्य हो गए। वनुष तो उनमें उठा भी नहीं
 रियासत का राजा था जो राम ने वह अद्वितीय वनुष क्षण भ
 नता का
 सीता का पति बन गया। सीता ने राम को पहना दी
 पत्र का
 राम का विधिवत विवाह हो गया

महाराज सीरध्वज को राम ने अपना युवराज
 बनाया। सीता का पति बन गया। राम ने सीता को
 सीता का पति बन गया। राम ने सीता को

प्रार्थना की। एक वर के उपलब्ध में उसने राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँगा और दूसरे में भरत के लिए उतने काल का राज्य। वृद्ध राजा हतबुद्धि होगया। एक ओर पुत्र का प्रियोग था दूसरी ओर वचन। पर था वह शत्रु का धनी। उसने अपना वचन नहीं धारा।

पिता के वचन को पूरा करने के लिए राम वन को चल पड़े। लक्ष्मण और सीता ने भी उनका अनुकरण किया। सीता एक आदर्श नारी थी। उसने अपना धर्म निवाहा और लक्ष्मण ने भी भ्रातृभाव का एक उज्ज्वल प्रमाण दिया। राजा दशरथ पुत्र-वियोग को सहन न कर सके और उनका देहावसान हो गया। भरत इस समय अपने माता के घर थे। वे अयोध्या लौटते तो नव कुटुम्ब देख मुन कर मरु हो गए। अपने मन्त्रियों और कुल-पुरोहित वसिष्ठजी के साथ वे राम को लौटा लाने के लिए वन को गए। पर राम कहाँ मानने वाले थे उन्होंने समझा चुका कर भरत को लौटा दिया।

[illegible]

१००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥
 १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥
 १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥
 १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥ १००० ॥

पराजित हुए। रावण युद्ध में मारा गया। चौदह वर्ष अब समाप्त हो चुके थे। सीता सहित राम अयोध्या को लौटे।

राम के पुत्र—राम के दो पुत्र थे, लव और कुश। इसी प्रकार लक्ष्मण आदि के भी पुत्र थे। उन सब ने अपने अपने नाम राज बनाने। राम के अनेक पीढ़ी पश्चात् महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। उस युद्ध के समय अयोध्या की राजगद्दी पर उसी कुल का बृहद्बल नाम का एक राजा था, जो युद्ध में मारा गया।

पौरव-कुल

नहुष, ययाति और पुरु—मनु से पुरुरवा नामक एक राजा का सम्बन्ध है। उस पुरुरवा के कुल में नहुष और उस का पुत्र ययाति दो प्रसिद्ध राजा हो चुके हैं। पुरु इसी ययाति के पाँच पुत्रों में से एक था। उसके नाम से भारतीय इतिहास में पौरव नाम का एक वंश चला। पहले यह वंश इतना प्रसिद्ध नहीं था पर धीरे-धीरे इसकी प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई।

दुःपन्त—पुरु की कुल में ही महाराज दुःपन्त जिन्हें कई लोग दुष्यन्त भी कहते हैं बड़े प्रसिद्ध राजा हुए। उनकी एक धर्मपत्नी सुविश्याना शकुन्तला थी। इसी शकुन्तला से उनका एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

भरत—शकुन्तला के पुत्र के नाम से भरत, यह वीर बालक जब लड़ ही वय का था तभी वन में सिंह आदि हिंसक जन्तुओं को डराता था। भरत एक बड़ा राजा हुआ है। उसने अनेक विजय किए। उस सम्राट् परम स्वभाव से भी कहते हैं। उसने बड़े बड़े राज किए। उसका राज्या का अन्त नहीं था। कई विद्वानों का मत है कि इसी भरत के नाम से इस देश का नाम

भरत-खण्ड या भारत हुआ। पौरव कुल को ही भारत-कुल कहते हैं। गीता आदि ग्रन्थों में अर्जुन आदि को इसी कुल में उत्पन्न होने के कारण से 'भारत' कहा गया है। प्रसिद्ध ग्रन्थ महाभारत के नाम का कारण भी यही है कि वह भारत कुल का इतिहास है।

हस्तिन—भरत के कई पीढ़ी पश्चात् पौरव-कुल में एक राजा हस्तिन हुआ। उसने हस्तिनापुर का प्रसिद्ध नगर बनवाया। तब से हस्तिनापुर ही पौरव लोगों की राजधानी बन गई।

इस वंश में कुरु नाम का भी एक राजा हो चुका है। उसी के कारण इस पौरव वंश को कौरव वंश भी कहते हैं।

शन्तनु—हस्तिन के कुछ पीढ़ी पश्चात् प्रतीप नाम का एक बड़ा धार्मिक राजा हुआ। उसके तीन पुत्र थे, देवापि, वाह्लीक और शन्तनु। देवापि तो त्वचा-रोग के कारण वन को चला गया। उस ने राज्य नहीं लिया। वाह्लीक ने अपने मामा की कुल के साथ सम्बन्ध जोड़ लिया। अब रहा सब से छोटा शन्तनु। उसने राज्य संभाला। गङ्गा नाम की एक स्त्री से उस का पुत्र देवव्रत था। यही देवव्रत पीछे भीष्म नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शन्तनु की एक स्त्री धा दाशराज की कन्या सत्यवती। सत्यवती से उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य। राजा शन्तनु की वृद्ध वयस में ये दो पुत्र मिलकर राज्य संभाल करके उसे सुख प्राप्त हुआ।

चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य—चित्राङ्गद नाम की कन्या सत्यवती युद्ध में मारा गया। विचित्रवीर्य नाम की कन्या सत्यवती से इन दोनों के थे दो पुत्र—धृतराष्ट्र और पाण्डु।

धृतराष्ट्र और पाण्डु—धृतराष्ट्र नरहीन था अतः पाण्डु ने सब राज कार्य संभाला। पाण्डु अश्वमेध में दंडाधिकारी था।

अपने पिता के शीघ्र मर जाने से उसके कई राज्य जो अन्य राजाओं ने ले लिए थे, वे सब पाण्डु ने लौटा लिए। पाण्डु की ख्याति दूर दूर तक फैल गई। कुछ ही काल पश्चात् पाण्डु हिमालय के वन प्रदेश को चला गया। वहाँ उसके पाँच पुत्र उत्पन्न हुए। आयुक्रमानुसार उन के नाम—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव थे। दूसरी ओर धृतराष्ट्र के भी अनेक पुत्र हुए। उनमें से दुर्योधन और दुःशासन बड़े और पराक्रमी थे। पाण्डु जंगल में मर गया। ऋषि लोग उसके पुत्रों को उनकी माता कुन्ती सहित हस्तिनापुर में छोड़ गए। कहते हैं युधिष्ठिर उस समय १६ वर्ष का, भीम १५ का, अर्जुन १४ का और नकुल और सहदेव तेरह तेरह वर्ष के थे। दुर्योधन युधिष्ठिर से कुछ माम छोटा था। आरम्भ से ही दुर्योधन और पांडवों में कलह रहने लग पड़ी।

भगवान् कृष्ण—उन्हीं दिनों मथुरा के समीप व्रज की भूमि में एक और बालक गोप बालकों में पल रहा था। उसका नाम था कृष्ण। बाल्यकाल में ही उसने अश्रुतपूर्व काम किए थे। कुछ बड़ा होकर श्री कृष्ण ने कम का व्यव किया। श्री कृष्ण और उनके ज्येष्ठ भ्राता बलराम जी ने मारिषिनी नाम के आचार्य से वेद और अर्थाविद्या सीखी। श्री कृष्ण यादव कुल के थे। उस समय यदुवंशी लोग बड़े कष्ट में थे। श्री कृष्ण ने उन का सघन स्थापित किया और आप राजा न बन कर व समक नायक ही रहे। नरासन्ध के दिन मगर के वतारपी राजा था। उसने अनेक नविय राजा बन्दी बनाए हुए थे। वह पांडवों का भी शत्रु था। उन्हीं के आक्रमण में बचने के लिए श्री कृष्ण ने यादवों को समुद्र तट वर्तमान दार्जिलिंग पुरी में बसा दिया। इस प्रदेश का पुराना नाम आनंत था।

दुर्योधन हस्तिनापुर में पिता के साथ राजकाज देखने लगा और युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थ नगर का राजा हुआ और उसने अपना ऐश्वर्य खूब बढ़ाया। इसे देख कर दुर्योधन और उसके भाई जलते थे। इन्हीं दिनों अर्जुन और कृष्ण की अटूट मैत्री हो चुकी थी। श्री कृष्ण की गम्भीर नीति के बल से पाण्डव जरासंध को मार चुके थे। युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ बहुत सफल हुआ। उसके आरम्भ में श्री कृष्ण ने स्वयं शिशुपाल को भी मार दिया। दुर्योधन पाण्डवों का ऐश्वर्य सह न सका। गान्धार के राजा अपने मामा शकुनी के कहने से दुर्योधन ने युधिष्ठिर को घृन के लिए निमन्त्रण दिया। उस जुग में युधिष्ठिर राज-पाट हार गया। अब प्रतिज्ञा के अनुसार बारह वर्ष के वनवास और तेरहवें वर्ष के अज्ञात-वास के लिए पाण्डव वनकी ओर चले।

महाभारत का विख्यात युद्ध

तेरह वर्ष समाप्त होगए। पाण्डवों ने दुर्योधन से अपना राज्य मांगा। पर वह तो नृई की नोक के बराबर भी भाग देना न चाहता था। श्री कृष्ण भी भाई भाई में सन्धि कराने में असफल रहे अर्थात्तः के नव क्षत्रिय राजाओं ने दुर्योधन और पाण्डवों ने सह-पत मांगा और वे नव भी किसी न किसी ओर स इस युद्ध में लड़े। दुर्योधन दल का कौरव मना हस्तिनापुर में दुरुजय नक फैल गई। पाण्डव नव 'वराट प्रदेश' के विस्तृत क्षेत्र में 'अत्र' हुई। आयावन के इतिहास में यह युद्ध अपना प्राप ही २० वन में दुरुजय की भूमि पर यह युद्ध प्रठ रहे 'दल नर ह'न रहे। श्री कृष्ण की नीति और अर्जुन का धारन न थोड़ा मना वन पाण्डवों का विजय प्राप्त कर'इ इन्हीं युद्ध के प्रथम दिन भगवान

उदयन—उसके बहुत काल पश्चान कौशास्त्री मे उदयन राज करता था। इस उदयन की बड़ी कथाएँ प्रसिद्ध हैं। संस्कृत के अनेक नाटक इसी की कथाओं पर बने हैं। पुराने कवियों ने इस राजा का नाम चिरम्थाई कर दिया है। उन दिनों अवन्ति (उज्जयिन) मे चण्ड महासेन का राज्य था। वह एक शक्तिशाली राजा था। उसकी कन्या वासवदत्ता के साथ उदयन का विवाह हुआ।

मगध राज्य

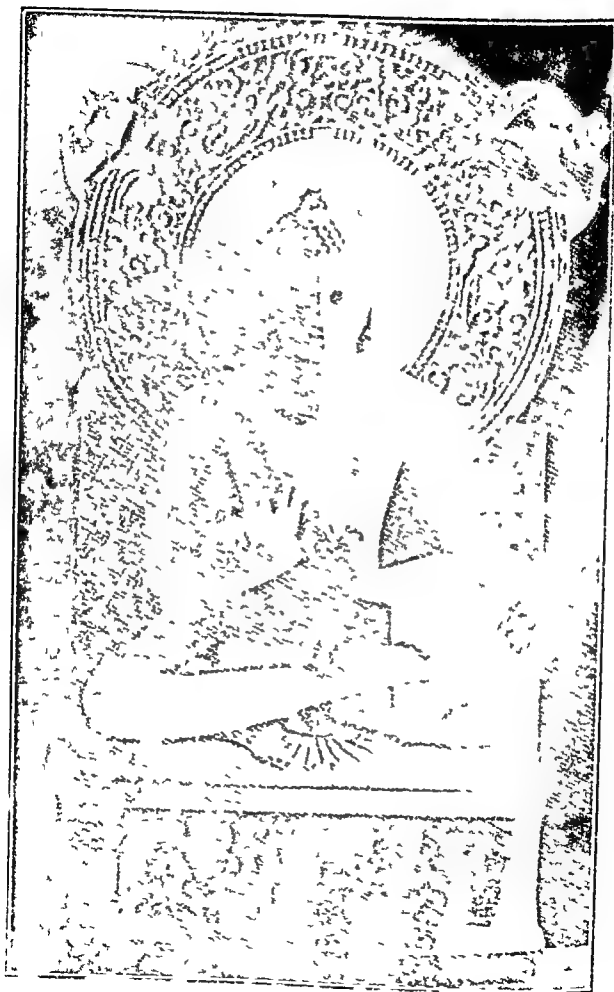
पूर्व लिखा जा चुका है कि भारत-युद्ध काल से कुछ पहले मगध पर जरासन्ध का राज्य था। उसका पुत्र सहदेव भारत-द्वि में पाण्डवों की ओर से लड़ता हुआ मारा गया। भारत-युद्ध से पहले मगध राज्य की बड़ी प्रधानता थी। युद्ध के कुछ काल पश्चात् मगध ने फिर वही प्रधानता प्राप्त कर ली। इस राजवंश में बड़े बड़े प्रभावशाली राजा हो चुके हैं। भारत का अगला इतिहास चिरकाल तक मगध के नाम से ही अविकाश मे सम्बन्ध रखता है।

छठा अध्याय

भगवान पार्श्वनाथ, शाक्य-मुनि बुद्ध

नथा तीर्थंकर महावीर का प्रादुर्भाव

वैदिक धर्म का ह्रास—वही वैदिक धर्म जो कभी बड़ा उदार था, अब सफीर्ण हान लगा। कमकाण्ड और शुष्क तर्क ने आर्य मनो पर अपना गहरा प्रभाव उत्पन्न कर लिया। धर्म की एकता नष्ट हो चली थी। राजा मे पशुवध अपनी पराकाष्ठा



को पहुँच चुका था। नैकडों छोटे छोटे विचारक अपना सम्प्रदाय खड़ा करने की चिन्ता में थे। ऐसे काल में कई सुधारकों की बड़ी आवश्यकता थी।

भगवान् पार्श्वनाथ—ईसा से कोई ७५० वर्ष पहले ऐसे ही एक महापुरुष का जन्म हुआ। उनका नाम था श्री पार्श्वनाथ। वे तपस्वी वीतराग और ज्ञानवान व्यक्ति थे। उन्होंने अहिंसा धर्म की पताका खड़ी की। उन का सारा जीवन लोगों को मरतना, अहिंसा और त्याग सिखाने में ही बीता। धीरे धीरे उनके बहुत से अनुयायी हो गए। वे जैन धर्म के तीर्थंकरों में से थे। उनसे पहले भी जैन धर्म के कई तीर्थंकर हो चुके थे।

शाक्यमुनि बुद्ध—ईसा से कोई छ सौ वर्ष पहले नेपाल की तलहटी में शाक्य जाति के कत्रियों का शासन था। उनकी राजधानी कपिलवस्तु नाम से प्रसिद्ध थी। उस समय वहाँ का राजा शुद्धोदन था। गौतम बुद्ध इसी महाराज शुद्धोदन का भाग्य-शाली पुत्र था। बुद्ध का बाल्यकाल का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ के अत्यन्त शान्त बड़े लक्ष्य में हुआ। युवा अवस्था में उस का नाम पुनर्जात गय। उसका एक पुत्र अश्वमेध नाम से जन्मा।

एक दिन वह विचारवान था वह समझ के अपने ही लक्ष्य की तरफ था। एक दिन मगध के राजा सम्राट अशोक ने उसी राजा का नाम किन्ना मुक्त के राज का नाम न के लक्ष्य में रहे थे। सिद्धार्थ के चिन्तन पर उसके लक्ष्य में परिवर्तन आया। उसने विचार किया कि एक दिन मुझे भी मगध का राजा बनना पड़ेगा। मगध के लक्ष्य की पत्रिका अपने लक्ष्य में

खोने लगे। एक रात सोई हुई स्त्री की ओर अन्तिम दृष्टि डाल राजकुमार सिद्धार्थ ने घर त्याग दिया। गृह-त्याग के समय उसकी आयु कोई ३० वर्ष की थी।

घर से निकल कर राजकुमार ने दर्शन-शास्त्र का अध्ययन किया। इस अध्ययन से उसे शान्ति न मिली। छ वर्ष अत्यन्त कठिन तप तथा उपवास किए, परन्तु मनोरथ सिद्ध न हुआ। अन्त को गया में एक वृक्ष के नीचे समाधि लगाई। इसी समाधि के अन्त में उसे प्रकाश मिला। उसकी आत्मतत्त्व का बोध हुआ। अब वह वस्तुतः बुद्ध बन गया।

जिस पीपल वृक्ष के नीचे बुद्ध ने समाधि लगाई थी, बौद्ध उसे बाधिवृक्ष कहते हैं और उसका बड़ा मान करते हैं। दूर दूर से बौद्ध लोग अब भी गया के उस स्थान की यात्रा के लिए आते हैं। बुद्ध अपनी शिष्याओं को आर्य-मार्गीय कहते थे। उन्होंने अपना शेष जीवन इन्हीं शिष्याओं के प्रचार में लगाया।

काशी के पास मारनाथ नाम का एक स्थान है। वहाँ पर बौद्धों के पुराने मन्दिरों के भग्नावशेष अब भी दिखाई देते हैं। वही में भगवान् बुद्ध ने अपने बौद्ध धर्म या आर्य मार्ग-वाह आरम्भ किया। वह स्थान भी बौद्धों का एक तीर्थ था। राहु नाम प्रचाराय महात्मा बुद्ध का पर्यटन काशी में सिद्धार्थ के प्रदर्शना में नहीं हुआ। वह मगध और उसके समीप बड़-गया नाम का प्रस्थान करने थे। उन के महस्रो शिष्य बन-एक अर-राग्यवान् हुए व भिक्षु बन गए। अनेक और न-पडा। उस-अत्मा ज-उत्पन्न हुई

बुद्ध का उपदेश—बुद्ध परलोक की बातों का उपदेश न करते थे। उनके सामने निर्वाण-प्राप्ति ही जीवन का एक मुख्य आदर्श था। यह निर्वाण सत्य, दया, और आत्मशुद्धि से प्राप्त हो सकता है। अतः इन्हीं बातों पर वे अधिक बल दिया करते थे। भगवान् बुद्ध से यदि कोई दार्शनिक प्रश्न करता भी था, तो वे उसका उत्तर नहीं देते थे। इसीलिए बौद्ध धर्म के प्रागम्भिक काल में जटिल दार्शनिक विचारों का अभाव ही था। लगभग ८१ वर्ष की आयु में बुद्ध ने यह नश्वर शरीर त्यागा। उन की मृत्यु ईसा से कोई ५०० वर्ष पूर्व हुई थी।

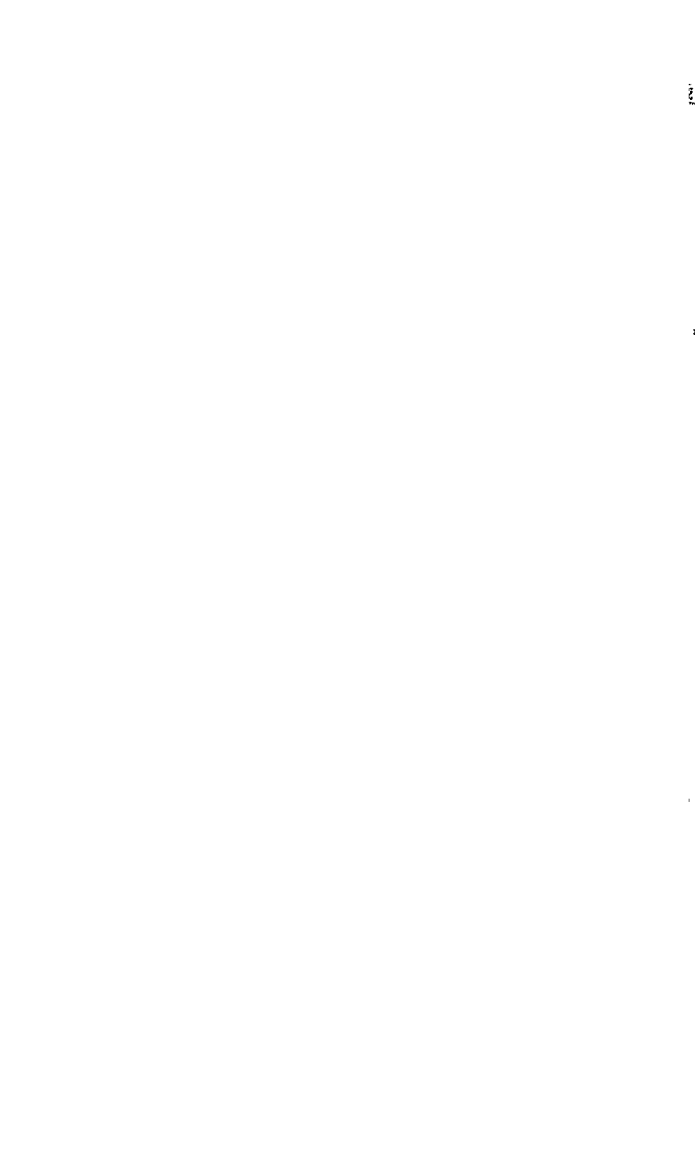
संघ—अपने भिक्षुओं को बुद्ध ने बौद्ध धर्म के प्रचार का आदेश दिया। इसी निमित्त उन्होंने बौद्ध संघ का निर्माण किया। भिक्षुओं को विशेष कठिन नियमों का पालन करना पड़ता था। पहले तो यह संघ बड़े उच्च आदर्श वाला था और इसके द्वारा बौद्ध धर्म का अच्छा विस्तार हुआ, पर धीरे-धीरे इस संघ में अनेक दुरी बाते आ गई। उन्हीं के कारण आर्यावर्त की भूमि से अन्त में बौद्ध धर्म उठ ही गया।

पूज्य तीर्थंकर महावीर स्वामी—आर्यावर्त के इतिहास में बहुत प्राचीन काल में वैशाली (पटना के उत्तर में वर्तमान बनारस) का एक जत्रिय राज्य रहा है। ईसा से कोई ५५० वर्ष पूर्व यहाँ लिच्छवि जाति का राज्य था। उनके ही उन दिनों एक राजकुमार था। उसका नाम था वर्धमान। कुमार वर्धमान की शिक्षा का ध्यान प्रदत्त हुआ। दुर्बल्य में उसका विवाह भी हुआ। पर सामरिक धन्यता में उसका चित्त नष्ट हो गया। ३० वर्ष की आयु में उसने माँह में डूबने का नामावरक धन्यता बाँध दिया। इस त्याग के अनन्तर उसने धीरे-धीरे तपस्या का आरम्भ

किया। पुराने आर्य ऋषियों को छोड़ कर इतनी तपस्या और किसी ने न की होगी। जैनो में तपस्या वैसे भी धर्म का एक प्रधान अङ्ग है। भगवान महावीर ने १३ वर्ष की तपस्या के पश्चात् ज्ञान प्राप्त कर लिया। अब वे यह प्राप्त ज्ञान औरों को देने लगे। वे स्थान स्थान में घूम कर अपने धर्म का उपदेश देते थे। उनका मार्ग जैन-धर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। महावीर स्वामी लगभग ७२ वर्ष की आयु तक इस मानव कलेवर को धारण किए रहे।

जैन धर्म के सिद्धान्त—जैन धर्म में अहिंसा पर बड़ा बल दिया गया है। धर्म के इस सूक्ष्म तत्त्व को जितना जैनो ने समझा है, उतना अन्य किसी ने नहीं पहचाना। वैदिक धर्म में हिंसा बहुत बढ़ गई थी। जैन तीर्थंकरों ने उसका नाश करके पुन मानवता का प्रचार किया। आत्म-शुद्धि, त्याग और तपश्चर्या पर भी जैनो की असीम श्रद्धा है। सत्य उनके धर्म का मुख्य अङ्ग है। आत्मा को जैन लोग अमर मानते हैं। उस आत्मा की भिन्न भिन्न गतियाँ हैं। उन्नति करती करती वह मोक्ष को प्राप्त कर लेती है। जैन मुनियों का जीवन बहुत ऊँचा और अनुकरणीय है। पहले तो जैनो में भी गम्भीर दार्शनिक विचार के ग्रन्थ नहीं बने, पर उत्तर काल के जैन दार्शनिक ग्रन्थ संसार के साहित्य में बड़ा प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं।

बौद्ध और जैन—बौद्ध और जैनो के कई सिद्धान्त परस्पर मिलते हैं। इन के कई सिद्धान्त वैदिक सिद्धान्तों के ही किंचित् परिवर्तित रूप हैं। पर कई सिद्धान्तों में उन का परस्पर मतभेद है। भगवान बुद्ध का कथन है कि उन्होने किसी नए मार्ग का प्रचार नहीं किया। उन से पहले भी अनक बुद्ध हो चुके थे। इसी प्रकार स्वनाम-वन्त्य महावीर स्वामी जी भी यही कहते थे कि उन्होने



४—लिच्छवि वंश

इस वंश ने एक प्रजातन्त्र राज्य स्थापित किया हुआ था। इन की राजधानी वैशाली थी। आज कल बिहार प्रान्त का जो मुजफ्फरपुर जिला है, उसी में यह प्रसिद्ध नगर था। इस जाति में बड़े बड़े योद्धा हुए हैं। बुद्ध काल से कई सौ वर्ष पीछे प्रसिद्ध गुप्त वंश की स्थापना में इस जाति का भी बड़ा हाथ था।

५—चण्ड प्रद्योत

भारतवर्ष में उज्जयिनी नामक एक बड़ा पुराना नगर है। अत्यन्त प्राचीन काल से वहाँ कई महान् राज्य रहे हैं। बुद्ध के काल में यहाँ के राजा का नाम चण्ड, अथवा महामेन अथवा प्रद्योत था। उज्जयिनी नगर की शोभा इतिहास में विख्यात रही है।

६—शुद्धोदन

यह बुद्ध का पिता और कपिलवस्तु में रहने वाला था। इन का वंश शाक्य-वंश कहाता है। इस का राज्य भी एक प्रकार का प्रजातन्त्र राज्य ही था।

आठवाँ अध्याय

मगध का नन्द वंश

शैशुनाग वंश के पश्चात् मगध पर नन्द वंश का अधिकार हुआ। इस वंश का आदि पुरुष महानन्दी था। यह छोटी जाति का था। इन के उदय के साथ विभिन्न जात्रियों का हानि हो जाता गया। नन्द वंश ने मूल राज को धोरे न मारकर अपना

चन्द्रगुप्त का राज्य—उसमें से ३-३ वर्ष पते मिलने पर मन्तु हो गई। उसके मंत्रापति परम्परा लग गई थे। पाल के प्रविकांश प्रदेश चन्द्रगुप्त ने अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया था। हिमालय के पारवत्य राज्य भी चन्द्रगुप्त ने जीत लिया था। वज्जाल की माली तक चन्द्रगुप्त की विजय पताका फहराती थी। उस प्रकार हिमालय से विन्ध्या और वज्जाल से हिन्दूकश तक के प्रदेश चन्द्रगुप्त की अधीनता में था।

महामन्त्री चाणक्य—जिस चाणक्य का अभी कथन किया गया है, उसका दूसरा नाम कोटल्य* अथवा आचार्य विष्णुगुप्त था। चन्द्रगुप्त के महामन्त्री पद को यही नीतिज्ञ विष्णुगुप्त निकाल तक अलङ्कृत करता रहा। उस राजनीति का आवतार कहें तो अनुचित न होगा। यह वृत्त दीर्घजीवी था। आर्यभट्टश्रीमूलक नामक बौद्ध ग्रन्थ में लिखा है कि वह तीन पीढ़ियों तक अर्थात् चन्द्रगुप्त चिद्रुमार और अशोक तक उसी पद पर आरुढ़ रहा। उस का न्याय नियम प्रत्यक्ष आय बौद्ध, जैन सभी का वह हिन्दू था। भगवत् कर्ण के अनुसार राजनीति का वही एक अपार पाटन था।

कोटल्य का अर्थशास्त्र—इतिहास का अर्थशास्त्र समुद्रत वाङ्मय में एक बड़ा महत्व का अर्थ है। महानरत और उसमें भी पहल काल में बड़े बड़े अर्थशास्त्रों ने अपना कथन रखा था। उनमें से उद्भूत राजा चाणक्य का अर्थशास्त्र और नारद आदि के ग्रन्थ बृहत्काय व अचार्य मानव ने उन सब का सार प यह ग्रन्थ लिखा। इसमें पटन में सामान्य क सूत्र और व्यापक * साधारणतया अब तक यह नाम सामान्य लिखा जाता है, प गोत्र होने के कारण कोटल्य नाम ही शक है।

जाय कि आज्ञा माँगने वाला व्यक्ति सदाचारी, विद्वान और वैराग्यवान् है, तब ही उसे भिक्षु बनने की आज्ञा मिलती थी। भिक्षु बनने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति को अपनी स्त्री आदि के निर्वाह का प्रबन्ध कर देना पड़ता था। इस नियम के कारण बौद्ध लेखकों ने चाणक्य को अनेक घुरे नामों से स्मरण किया है, क्योंकि हर एक मनुष्य अनायास भिक्षु नहीं बन सकता था।

मैगस्थनीज लिखता है कि आर्य लोग अपने कृषकों का बड़ा ध्यान रखा करते थे। जब चत्रिय सैनिक युद्ध कर रहे होते थे, तब उनके समीप ही किसान अपनी खेती करते रहते थे। किसानों को कोई कष्ट नहीं पहुँचाता था। किसानों को सेना में नौकरी नहीं देनी पड़ती थी। इस सुव्यवस्था के कारण भोजन सामग्री का बड़ा आविश्यक था।

रहन-महन—भारतीय लोग मुन्दर आभूषण और मुन्दर वस्त्रों के बड़े पुजारी थे। इस काम के लिए वे चादी और सोने का बहुत प्रयोग करते थे। उनकी मलमल बहुत बारीक और फलदार होती थी। वे रंग वस्त्र भी पहनते थे। द्रव्य उनके वस्त्रों पर मुनहरी काम किया जाता था।

मन्य—भारतीय आय बड़ मन्यवादी और परस्पर विश्वास करने वाले होते थे। वे मुद्दम नहीं करते थे। चारी कही दिखाई न देती थी। विपशा लोग पर इस बात का बड़ा प्रभाव पड़ा करता था। लोग पराकांक्षे नहीं लगते थे।

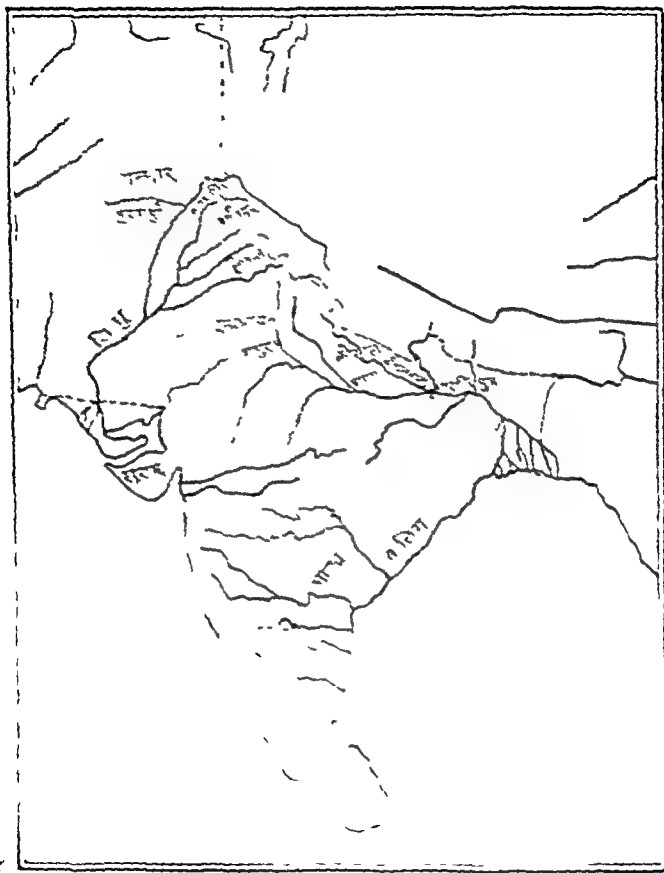
धर्म—आर्य ब्राह्मण और जैन अपने अपने मन्दिर थे। आर्य लोग अनेक देवताओं का पूजन करते थे। शिव और वाणु की पूजा अधिक थी। ब्राह्मणों का मान्यता में लोग विश्वास रखते थे।

अशोक

विन्दुसार की मधु के पत्रान्न मन्त्री-मण्डल ने अशोक को
 प्रीति ही पाटलिपुत्र में बना लिया। अथ अशोक भारत की
 सम्राट् बना। ननशिता और उषाविनी के पश्यन में अशोक
 ने जो अथना कौशल दिया था वही अथ उस ने सारे राज्य
 के प्रधान में दिखाना आरम्भ किया।

अशोक का राज्याभिषेक—अशोक राजा तो मन वृथा था, पर उस के विभिन्न अभिविक्त होने के मध्यम में व्याधुनिक लेखकों के दो मत हैं। कई विद्वानों का कहना है कि अशोक का राज्याभिषेक विन्दुसार की मृत्यु के लगभग चार वर्ष पश्चात् हुआ और दूसरे विद्वान कहते हैं कि अशोक का राज्याभिषेक उसके पिता की मृत्यु के कुछ दिन पश्चात् ही हो गया। अशोक के राजपाने के विषय में अनक विद्वान कहते हैं कि वह अपने ६६ भाइयों का वध करके समाप्त बना था पर दूसरे कहते हैं कि ऐसा नहीं हुआ। अशोक के कई विज्ञापन या म पत्र जगाते हैं कि उस के भाई उस के राज पाल में भागिगीमान थे।

कलिङ्ग-विजय— यथाहात ही युद्ध में भाग लेना चाहते थे। यद्यपि कलिंग के राजा अशोक ने युद्ध से पूर्व भी कलिङ्ग नाम संपादित था। मगध के काल में और उससे पूर्व भी यह प्रदेश अपनी महत्ता को बताना चाहता था। इसका राजा अश्वमेधशक्तिशाली था। अन्तर्गत और विन्ध्यसार के काल में भी कलिङ्ग ने अपनी स्वतन्त्रता दिखा रखी थी। परन्तु मौर्य साम्राज्य के मन्त्री मण्डल का यह बात बर्तन नहीं करता था। अशोक के सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात् मौर्य राज्य में भारी सैनिक



མཚོ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་

से वीर अर्जुन के हृदय में विषाद प्रविष्ट हुआ था, उसी प्रकार कलिङ्ग के असाधारण नर-संहार के पश्चात् अशोक का हृदय परमाहत हुआ। अर्जुन को भगवान् कृष्ण ने सँभाल लिया था तथा अर्जुन कर्तव्यमात्र कर रहा था। शुभ कर्तव्य के लिए नर-संहार रुकावट नहीं, श्रेय है। पर अशोक ने केवल साम्राज्य के लिए ही लाखों लोगों की इश्लोक यात्रा समाप्त कर दी। उसे विषाद हुआ, जिसमें पश्चात्ताप की मात्रा अधिक थी। उसके पास कोई कृष्ण नहीं था। सम्भवतः चाणक्य भी काल का प्राप्त बन चुका था। अतः अशोक की मानसिक प्रवृत्ति बौद्ध आचार्यों के प्रभाव से बौद्ध-वैराग्य की ओर झुकी। ऐसी प्रवृत्ति ने चिरकाल के लिए क्षात्र-धर्म के तेज को मंद कर दिया।

अशोक ने दक्षिण के गेहे सहे छोटे राज्यों का नाश बंद कर दिया। उसने उन पर आक्रमण नहीं किए। यदि अशोक एक बार भी सकल्प कर नेता तो वह नकुल के समान या रूप तक दिग्विजय कर आता। पाण्डव नकुल सैन्धव सागर तक पहुँच आया था। अशोक मिस्रन्दर से बटकर अपना मोलक प्रभाव डाल सकत था। पर अब अशोक का मन और प्रकार सा हो गया था। समारम कदाचिन् ही फाड़ गया होगा। तबसे इस प्रकार अपना राष्ट्रकोण बदला है। ब्रह्माण्ड वातवायु जनको को भी कई युद्ध करने पड़े परन्तु अशोक ने तो युद्ध का त्याग कर दिया, सबका योग कर दिया। यह बौद्ध प्रभाव का फल था। इसमें एक ही बात मिलायी कि अशोक ने अपने राज्य के प्रबन्ध में शिथिलता नहीं आने दी। सम्भवतः उसका मन्त्रीमण्डल इस प्रबन्ध के करने में बड़ा बन गया। उसी मण्डल के कारण मौर्य राज्य-नीति में कोई परिवर्तन नष्ट होने पाया।

धर्म विजय—जात्र-विजय को छोड़ कर अशोक ने धर्म-विजय का पथ पकड़ा। नृत्य, द्रव्य, दान, अहिंसा त्याग और कामलता आदि को ही वह धर्म समझता था। ये ऐसी बातें हैं, जो हर एक के लिए लाभकारी हैं। बौद्ध हो या जैन, वैदिक हो या नास्तिक सभी धर्म और मत वालों का इन से सम्बन्ध पड़ता है। स्वयं बौद्ध मतानुयायी हो कर भी सम्राट् अशोक ने एक सरल धर्म का प्रचार किया।

कलिङ्ग ध्वजय के एक या नवा वर्ष परवान पराक ने पूर्ण रूप से बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। उसके लगभग २६ वर्ष परवान उसने अपना पहली धर्म गोरक्षा की। उनमें वह रहता है कि बौद्ध धर्म की आज्ञा से ही वह इस धर्म मार्ग का अनुसरण करने लगा है। धर्म विजय के लिए अशोक ने विभिन्न योजनाएँ की। उनमें से कतिपय नीचे लिखी जाती हैं।

१. बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिये अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया। इन स्तूपों पर बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का प्रचार किया गया।

२. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

३. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

४. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

५. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

६. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

७. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

८. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

९. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

१०. अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया।

'अशोक' नाम मिलता है और शायद यही मे नन्दराज प्रियदर्शी लिखा है।

शिलाग्रो के अनिर्दिष्ट अशोक ने जितने थमे गुड़वाग के
सब अत्यन्त मुन्दर और चुनार के पत्थर के हैं। चुनार ने दूर
देशों में वे कैसे भेजे गए, वह भी एक आश्चर्य की बात है। और
पहाड़ों के बीच से खैर घाटी के आगे अशोक की प्रसिद्ध दीवार
आज भी 'अकिर कोट' के नाम से पकारी जाती है।

इन गिलालेखों की लिपि—भारत की प्राचीन लिपि
पढ़ने का श्रेय विदेशी विद्वानों को है। उन्होंने अपने बहुमुख
जीवनो में अपने-अपने वर्ग तथा रस से लिपि पढ़ी। हमने पहले इन
लिपियों के सम्बन्ध में तथा बहुतों से लिखा करते थे। ये
लेखकों लिपियों के हैं। मन्त्रों के लिये भारत इसकी है। गिला
लेखकों लिपियों के हैं। मन्त्रों के लिये भारत इसकी है। गिला
लेखकों लिपियों के हैं। मन्त्रों के लिये भारत इसकी है। गिला

५५५ अथ चतुर्थः ।

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

उसका एक बड़ा कारण अशोक था। अपने विशाल राज्य के संचालन के अनुभवों का उसने धर्म-प्रचार में प्रयोग किया।

अशोक के राज्य में शिक्षा का प्रचार—अशोक के राज्य में शिक्षा का बड़ा विस्तार प्रतीत होता है। शिलालेख बताते हैं कि उन्हें प्रजा का पर्याप्त भाग पढ़ सकता था। बौद्ध-विहारों में बड़े-बड़े आचार्य शिक्षा देते थे। यह शिक्षा आर्यों के शिक्षा आदर्श के अनुसार बिना फीस दी जाती थी।

अशोक का शासन—अशोक का शासन मुद्दह परन्तु दयापूर्ण था। वह एक शिलालेख द्वारा कहता है—“चाहे मैं खाता होऊँ, चाहे अन्त पुर में होऊँ, चाहे शयनागार में, मैं प्रजा का कष्ट हर समय सुनूँगा। मेरा कोई नौकर उस कष्ट को मेरे तक पहुँचाने में देर न करे।” अशोक फिर कहता है—“छोटे राजाओं को मुझ से डरना नहीं चाहिए। मैं उन्हें कष्ट न दूँगा।” ये भावधर्म जन के अनुसार अशोक राज्य करता था। एक कालिङ्ग-विजय ने उसे कितना दयालु बना दिया था।

अशोक का अन्तिम समय—यम में लगा हुआ अशोक दिन प्रतिदिन अधिकारीय बन कर रहता था। एक बार जब वह पत्नी दान करने लगा तब मन्त्रा परिषद ने उसे रोक दिया। मन्त्रिण अशोक ने अमा-या स पुत्रा — सैन अब पृथिवी का स्वामी है? मन्त्रा वाक्य— दव भाम स अविपति है। अशुपूर्ण ने स अशोक न फिर रहा था आप असम्य कहते हैं? हम राजा मे अष्ट हा चक्र। समा समय यमन। मनुष्य का सूचित कर दिया कि राजा अब अपना शक्त स वाचन हा गया।

अशोक अन्त में स अशोक था। वह प्रजा के प्रतिनिधियों की अवहलना नहीं करने चाहता था। उच्च मन्त्री-मण्डल

आरम्भ हो गया। उत्तरापथ के चमरगानिस्तान आदि प्रदेश स्वतन्त्र हो गए। कश्मिर और आन्ध्र देश भी सौर्य सत्ता ने नियंत्रित किए।

सौर्य राज्य के मन्त्री-परिषद् में अब पहला साक्षर नहीं था। जिस विशाल साम्राज्य की जवाबदारी चन्द्रगुप्त ने रखी थी, वह उसकी कमजोरी पीढ़ी ने चन्द्रगुप्त के समय नष्ट हो गया। वह मगध राज्य जो भारत के इतिहास में नई दार अपनी चमक दिखा चुका था, अब फिर लोप हो गया। सौर्यगण मन्त्र और पहले सौर्य राजाओं ने मगध का ऐश्वर्य लक्ष्मण के दिवा था, पर तीन-चार अन्तिम सौर्य राजाओं के काल में वह मन्त्र पट गया।

दशम अध्याय

शुंग, काण्व और सातवाहन वंश

सौर्यगण के पतन के बाद मगध राज्य का अधिकार शुंग वंश ने हाथ में लिया। शुंग वंश का उद्भव मगध के एक क्षत्रिय वंश से हुआ था। शुंग वंश के प्रथम राजा शुंग ने मगध राज्य का अधिकार हाथ में लिया था। शुंग वंश के राजाओं ने मगध राज्य का अधिकार हाथ में लिया था। शुंग वंश के राजाओं ने मगध राज्य का अधिकार हाथ में लिया था।

पुनर्निर्माण

ने कई युद्ध किए। उसका राज्य गारुल या म्यालहोट से लेकर वज्जाल के समुद्र तक और दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैला हुआ था। उसने लगभग ३६ वर्ष तक राज्य किया।

अश्वमेध यज्ञ—पुण्यमित्र आर्य-सम्राट् था। वह वेद और आर्य सस्कृति का परम पोषक था। अर्जुन के पड़पोते महागजानमेजय के पश्चात् उसी ने भारत में दो बार अश्वमेध यज्ञ किया। उसका यज्ञीय घोड़ा सिन्ध के किनारे पर आ निकला उसे ग्रीक या यवन लोगों ने रोक लिया। घोड़े की रक्षा के काम पुण्यमित्र के पोते कुमार वसुमित्र के सुपुर्न था। उसने घोड़े को सप्राप्त करके यवनों को परास्त किया और अपने घोड़े को लुटाया। इस काल तक पुण्यमित्र का साम्राज्य सिन्ध तक पहुँच गया होगा।

आचार्य पतञ्जलि—प्रातः स्मरणीय भगवान् पाणिनि मुनि ने संस्कृत का एक अनुपम व्याकरण रचा है। ससार भर के विद्वानों का मत है कि किसी भी भाषा का ऐसा व्याकरण नहीं बन सका। मञ्जु-श्री-मूलकल्प में लिखा है कि महाराज नन्द का एक मन्त्री वररुचि था। उसी का एक मित्र ब्राह्मण पाणिनि था। इस कारण जायसवाल का मत है कि वैयाकरण पाणिनि नन्द के काल में हुआ। दूसरे विद्वान कहते हैं कि पाणिनि का काल नन्दों से बहुत पहले का है। उन पाणिनि मुनि के छोटे आकार के ८० पृष्ठ के ग्रन्थ पर पतञ्जलि ने २००० पृष्ठ का व्याकरण महाभाष्य नामक एक अमूल्य टीका-ग्रन्थ रचा। पतञ्जलि इस महाभाष्य में लिखता है—“हम पुण्यमित्र के यज्ञ करा रहे हैं” अर्थात् पुण्यमित्र के यज्ञ में पतञ्जलि सह विद्वान् पुरोहित का काम कर रहा था।

कलिङ्ग-मन्नाट् खारवेल—जब मौर्य-साम्राज्य निर्बल हो रहा था, तब कलिङ्ग में फिर एक राज-सत्ता निर उठा रही थी। महाभारत और उन से पहले कालों में चंडि नाम का एक प्रसिद्ध राजवंश चला आ रहा था। उसी राजवंश में कलिङ्ग का राजा खारवेल हुआ। उस का एक बड़ा लम्बा शिलालेख अब भी मिलता है। उड़ीसा में भुवनेश्वर के पास हाथी गुम्फा नाम की एक गुफा है। खारवेल का शिलालेख उसी गुफा में एक चट्टान पर खुदा हुआ है। भाषा उस की है प्राकृत। उस शिलालेख पर खारवेल के जीवन की मुख्य मुख्य घटनाएँ लिखी हुई हैं।

खारवेल की विजय—यह राजा जैन था। उस समय उड्डासा या कलिङ्ग में जैन लोग बहुत फैल गए थे। शिलालेख में पता लगता है कि खारवेल ने बड़ा प्रयत्न रखा। तत्पश्चात् २५ वर्ष की आयु में उस का महाराज्यभिषेक हुआ। इस न कलिङ्ग में राजा का यह अन्तर्गत प्रक्रमण किया

मौर्यन पर यवन आक्रमण ३२५-३२३-३२२ ई.पू.

३२२ ई.पू. में अशोक के जन्म का समय

३२३ ई.पू. में अशोक के जन्म का समय

३२४ ई.पू. में अशोक के जन्म का समय

३२५ ई.पू. में अशोक के जन्म का समय

३२६ ई.पू. में अशोक के जन्म का समय

३२७ ई.पू. में अशोक के जन्म का समय

३२८ ई.पू. में अशोक के जन्म का समय

३२९ ई.पू. में अशोक के जन्म का समय

अशोक का जन्म ३२५ ई.पू.

दण्डनीति में एक शिथिलता आ रही थी। इसी शिथिलता मौर्य साम्राज्य का अन्त किया। अत्याचार बढ़ गया था, ढोंग वृद्धि पर था। अब एक ब्राह्मण राजा सिंहासन पर बैठा। उसका आदर्श मनु, महाभारत, और गीता थे। उसने उनके अनुसार कठोर दण्ड में देश में पुनः एकाधिपत्य स्थापित किया। बौद्ध लेखक पुण्यमित्र को गोमिमुख्य नाम से पुकारते हैं। वे कहते हैं कि उसने बहुत से बौद्ध मन्दिर नष्ट करवाए, और इसीलिए वह उत्तम में अपने अनेक अफसरो सहित किसी पर्वत के गिरने से मर गया।

अग्निमित्र—पुण्यमित्र के पश्चात् उसका पुत्र अग्निमित्र राजा का स्वामी हुआ। इस का राज्य सात या आठ वर्ष ही रहा। प्रतीत होता है कि कविकुल-गुरु कालिदास के मालविका-अग्निमित्र नाटक का यही अग्निमित्र नायक था। अग्निमित्र के अनन्तर शुग वंश के आठ और राजा हुए, परन्तु उन की कोई विशेष बात अभी तक नहीं जानी गई। शुगो ने लगभग १०० वर्ष तक राज्य किया। अन्तिम शुग राजा देवभूमि को उस के प्रपौत्रनामात्य वसुदेव ने मार कर स्वयं राज्य ले लिया। ✓

काण्ववंश—शुगो के समान काण्व लोग भी ब्राह्मण थे। ये यजुर्वेद के पढ़ने वाले और पक्के वेदिक थे। यजुर्वेद की काण्व शाखा पढ़ने में ही उन्हें काण्व या काण्वायन कहा जाता है। काण्व वंश के चार राजाओं ने काण्ड ४५ वर्ष राज्य किया। ये राजा नासिक थे और उन के सामन्त उन के आगे झुके रहते थे। मुशर्मा काण्ववंश का अन्तिम राजा था।

मातवहन या आन्ध्र वंश—चन्द्रगुप्त का उल्लेख करते हुए आन्ध्रों का वर्णन किया गया है। माय राज्य के विध्वंस के समय आन्ध्र पुनः प्रबल होन लगे। नासिक उस के चारों ओर

चल रहा है। दूसरी मूर्तियाँ टूटी हुई मिली हैं, परन्तु उन का विषय विवाद में परे हैं। वे निश्चय ही सातवाहनो के देवकुल की हैं। वर देवकुल सहाद्रि के नाना घाट में था।

आन्ध्र राज्य का विस्तार—आन्ध्र राज्य का विस्तार खूब हुआ। समुद्री व्यापार से इन को बड़ी आय होती थी। एक ओर रोम तक और दूसरी ओर मलाया तक इन का व्यापार फैला हुआ था। जब मगध पर काएव वश का अन्तिम राजा मुशर्मा राज्य करता था, तब एक सातवाहन राजा ने ही उत्तरीय भारत पर चढ़ाई की थी। उसने मुशर्मा को परास्त कर के काएव वश का अन्त कर दिया।

इस वश का अभी तक विस्तृत वृत्तान्त नहीं मिला। पुराणों की कृपा से इस वश के सब राजाओं के नाम तो सुरक्षित रहे हैं।

ग्यारहवाँ अध्याय

विदेशीय आक्रमण

सिक्न्दर के लोट जान के पश्चात् चन्द्रगुप्त ने पश्चिमात्तर भारत को अपने राज्य में मिला लिया। मौर्य राज्य के पश्चात् में किसी विदेशी का उत्तर पश्चिम के भाग में भारत में आने का साहस नहीं हुआ। परन्तु मौर्य राज्य के शीथिल हान ही अनेक विदेशी जातियों ने उत्तर पश्चिमीय भाग में भारत पर आक्रमण आरम्भ किए। ये जातियाँ थी—यवन, पाथर्व (पाथियन), शक और कुशन। इन्होंने अपने आक्रमण में कुछ सफलता प्राप्त की और पञ्जाब आदि में इन्होंने अपने राज्य भी स्थापित किए। यवन और

गंधर्व जातियों के तो हिन्दुकुश पर्वत से पश्चिम से अपने राज्य थे
रन्तु शक और कुशन ने ऐसी जातियाँ थीं, जिनका कि अपना
तोई स्थिर राज्य नहीं था ।

यवन आक्रमण—दिमिन—यवन राजाओं के अनेक निम्ने
पुस्तक से मिले हैं । उन से यवन-राजाओं का बहुत सा इतिहास
जात हुआ है । यवनो का दिमिन नाम का एक राजा था । उसने
भारत पर आक्रमण करके शाकल या न्यालकोट को ले लिया ।
न्यालकोट पुराने मद्र-राज की राजधानी थी । पारह्वो का माना
गन्ध इस देश का राजा था मन्त्री उन्नी की बहन थी । इन्नी शाकल से
दिमिन या दिमित्र जन गया । दिमिन ने राजगृह तक आक्रमण किया ।
त्वारवेले ने अपने प ठवे वर से राजगृह में ही उसका मुकाबला
किया । त्वारवेले से हार कर दिमिन मथुरा को भाग गया । यवनो
ने न यमक नगर पर भी आक्रमण किया । यह भायसिंह राज
का न म विभीषण से न साकल्यर जब आक्रमण था । उसने य
की क्रम से मथुरा इस से न यव राजा था । यवनो ने यमक
मथुरा मथुरा की क्रम से न यव मथुरा का नगर था । यवनो ने
नगर मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा

मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा

मथुरा - मिथिला मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा
मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा
मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा
मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा
मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा
मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा मथुरा



मार्थव जानियो के तो हिन्दुकुश पवन से पश्चिम से अपने राज्य थे, परन्तु शक और कुशन दो ऐसी जातियाँ थीं, जिनका कि अपना कोई स्थिर राज्य नहीं था ।

यवन आक्रमण—दिमित—यवन राजाओं के अनेक सिके मज्जाय से मिले हैं । उन में यवन-राजाओं का बहुत सा इतिहास ज्ञात हुआ है । यवनो का दिमित नाम का एक राजा था । उसने भारत पर आक्रमण करके शाकल या न्यालकोट को ले लिया । न्यालकोट पुराने मद्र-राज की राजधानी थी । पाण्डवों का मामा शल्य इस देश का राजा था, माद्री उषी की बहन थी । इसी शाकल से दिमित या दिमेव्र जम गया । दिमित ने राजगृह तक आक्रमण किया । पाण्डवों ने अपने आठवें वर्ष में राजगृह में ही उसका मुकाबिला किया । खारवेल से हार कर दिमित मथुरा को भाग गया । यवनो ने मध्यमिका नगर पर भी आक्रमण किया । यह मध्यमिका राज-पुनाना में चिन्नौड में छ, माल उन्नर-पूर्व एक नगरी थी । दिमित के आक्रमण लगभग इसा स १८० वर्ष पूर्व हुए थे । पतञ्जलि के मतानुसार मगध आक्रमण की आरम्भ किया गया है । दिमित का राज्य अफगानिस्तान से दूर से नदी तक फैला गया था ।

खारवेल के शिलालेख से यह निश्चित जाना है कि खारवेल वातकी और दिमित समकालीन थे ।

मेनन्ड्र = मिलिन्द—यह यवना का दूसरा प्रसिद्ध राजा था । इस का बौद्ध ग्रन्थों में बड़ा वर्णन मिलता है । बौद्ध इसे मिलिन्द नाम से लिखते हैं । इस के सिके पर मेन्ड्रा का समवर्तन हुआ है । यह अपने का नामक ग्रन्थों बौद्ध कहता था । उसने पुजरात और चिन्नौड तक विजय की । यह प्रजा जनो का इतना प्रयत्न करने लगा कि इस की मृत्यु पर उसकी प्रजा इसका राज्य को



11

होती। इसके दरबार में भी याजुष चरक-शाखा का पढ़ने वाला एक चरक वैद्य था, परन्तु चरक सहिना का ससर्तक उससे पहले हो चुका था। तद्वशिला के विश्व-विद्यालय की कनिष्क बड़ी सहायता करता था। इसके राज्यकाल में उसकी दशा बड़ी अच्छी थी। वह सब वर्गों का आदर करता था।

कला-प्रेम—वास्तु-कला से कनिष्क का बड़ा प्रेम था। उसने और उसके राजकर्मचारियों ने कई अत्यन्त सुन्दर मन्दिर बनवाए। उसके काल की बनी हुई बुद्ध-मूर्तियाँ भी सुन्दर हैं। कनिष्क क सोने का सिक्का भी चलता था।

मृत्यु—वृद्धावस्था में कनिष्क ने चीन पर आक्रमण करने का विचार किया। जब वह इस काम के लिए जा रहा था, तब मार्ग में वह एक मन्त्री के हाथ से मारा गया।

उत्तराधिकारी—कनिष्क के दो पुत्र थे—वाशिष्क और हुविष्क। वाशिष्क का पूरा पता नहीं लगता। गद्दी पर हुविष्क बैठा। वह भी अपने पिता के समान विद्याप्रेमी और सब धर्म के विद्वानों का आदर करने वाला था। मथुरा में उसने एक सुन्दर विहार निमाण कराया। काश्मीर में उसने हुविष्कतर नाम का एक नगर बसाया। चीनी यात्री ह्वान त्वाङ्ग अपनी काश्मीर यात्रा के समय उसी नगर के विहार में ठहरा था।

वामुदेव—हर्षवर्धन के पश्चात् वामुदेव राजा बना। वह जैव धर्म का अनुयायी था। उसने सिक्कों पर शिव और नान्दी की प्रतिष्ठा की।

कुशन राज्य का पतन—वामुदेव अपने पिता और पितामह के समान शक्तिशाली नहीं रहा। अकगानिम्तान और मव्य एशिया में हों गए। एक महामारी भी वामुदेव के साम्राज्य में फैल

पड़ी। प्रजा दुर्गयी होने लगी। मध्यभारत के प्रदेश भी स्वतन्त्र होने लगे। फिर भी वासुदेव के उत्तराधिकारी पञ्चाव में ईसा की तीसरी शताब्दी तक राज्य करते रहे। उस समय गुप्त-वंश का तेज बढ़ने लगा था। उसी तेज से तब यह वंश परास्त हो गया।

दारहवों अध्याय

ब्राह्मण साम्राज्य का पुनरुद्धार

नाग वंश=भारशिव वंश—जिस समय बौद्धमतावलम्बी कुशन शक्ति क्षीण हो रही थी, उसी समय विदिशा और कौशाम्बी के समीप भारत के मध्य में एक नया ब्राह्मण राजवंश उत्पत्ति प्राप्त कर रहा था। इस वंश के लोग पक्षे शैव थे, अतः उनके नाम के साथ शिव शब्द लगा रहता है। भारशिव का अभिप्राय भी शिव के उपासकों से हा है। ये लोग अपने आप को अन्त में वाकाटक भी कहने लग पड़े थे। इस वंश के कुछ एक राजाओं के नामों में पीछे नाग शब्द जुड़ा है और इनके मूर्तियों पर नाग (=साँप) की मूर्ति पाई जाती है। अतः पुराणों में इस वंश को नागवंश लिखा गया है। इस नागवंश का महाभारत कालीन नागों में कोई सम्बन्ध था या नहीं यह अभी अस्पष्ट है। नागवंश में भारशिव प्रधान थे और कई गण राज्य भी उनके अन्तर्गत थे मथुरा और पद्मावती में उनके कन्द थे।

भारशिव राजा—जिस समय कुशन शक्ति अभी पश्चिम में थी उसी समय भारशिवों का उदय हो गया था। उनका पहला राजा जेयनाग था और उसके पश्चात् छ मात और साधारण

तेरहवाँ अध्याय

गुप्त साम्राज्य

नागवश की शक्ति पर्याप्त थी, पर अत्यधिक न थी। कुशन और सातवाहन राजाओं के पश्चात् भारत में कई क्षत्रिय जातियों ने अपने छोटे-छोटे राज्य पुनः स्थापित कर लिए थे। इन में से शिवि, मालव, चौधेय और लिच्छवि विशेष स्मरणीय हैं। ये सारे गण राज्य थे—अर्थात् इन में राजा चुना जाता था। यह थी उत्तरीय भारत की दशा। दक्षिण में भी अवस्था कुछ कुछ ऐसी ही थी।

सन् ३१९ ईस्वी—इस सन में भारत में एक नए राज-वश का प्रादुर्भाव हुआ। यह वश गुप्त नाम से प्रसिद्ध है। गुप्त-वंशीय लोग भी क्षत्रिय थे। जिस वैदिक धर्म का जीर्णोद्धार शुंगों, काण्वों, और सातवाहनो ने किया था, तथा जिस के उद्धार के लिए भारशिवों ने अपनी मारी शक्त व्यय की थी उसी की रक्षा के लिए अब भारत में एक नई राज्य शक्ति का उत्थान हुआ।

चन्द्रगुप्त—इस वश का पहला प्रसिद्ध राजा चन्द्रगुप्त है। उस के पूर्वज माघादण्ड क्षत्रिय थे परन्तु वह पश्यव्य के इन्डुक था। सन् ३१९-२८ में राजसिंहगन्धन पर बैठ कर उस ने अपना सम्वत् चलाया। यह सम्वत् भारतीय इतिहास में गुप्त सम्वत् के नाम से प्रसिद्ध है। इस राजा ने अपना ज्ञान का सिक्का भी चलाया। शिला-लेखों में उस महाराजाधिराज का

गया है। लिच्छवि-वंश की एक राजकुमारी से विवाह कर के उस ने अपना बल बहुत बढ़ा लिया। वह वीर जाति उस की सहायक हो गई। उन्हीं की सहायता से उस ने अपने आसपास के कई छोटे राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया। बढ़ते बढ़ते उस का राज्य प्रयाग तक जा पहुँचा। चन्द्रगुप्त ने सम्वत् चलाने के पश्चात् लगभग १० वर्ष तक राज्य किया।

समुद्रगुप्त—सन ३३० के समीप समुद्रगुप्त राजा बना। उस का एक प्रसिद्ध शिला-लेख प्रयाग के दुर्ग में एक स्तम्भ पर खुदा हुआ है, उस लेख से पता लगता है कि वह बड़ा विजयी राजा था। उस ने सम्राट् की उपाधि धारण की थी। अनेक युद्धों में लड़ने से उस के शरीर पर कई घाव पड़ गए थे। इसी लिए कई पाश्चात्य ऐतिहासिक उसे भारतीय नेपोलियन कहते हैं। समुद्रगुप्त ने पहले उत्तरीय भारत पर विजय आरम्भ की। जो राजा उस के अत्यधिक विरोधी थे, उनका उसने समूल नाश किया और उन के प्रदेशों को अपने राज्य में मिला लिया। पहले युद्ध में उस ने पाटलिपुत्र नगर जीता और तत्पश्चात् उत्तर भारत के कई अन्य स्थान जीतता हुआ वह काश्मीर तक जा पहुँचा। फिर वह मध्य-भारत की जङ्गली जातियों की ओर बढ़ा। ये जातियाँ युद्ध प्रिय थीं। उन को परास्त करने में उसका पर्याप्त समय लगा। उन पर विजय प्राप्त कर के वह दक्षिण कोमल के राजा महेंद्रपाल से जा लड़ा। उस जीत कर वह उड़ीसा के समुद्री तट के साथ साथ दक्षिण की ओर गया। दक्षिण में एक एक करके सब राज्य उस के अधीन हो गये। इस प्रकार वह नीलौर तक पहुँच गया और वहाँ से फिर पाटलिपुत्र को लौटा। दक्षिण के राजाओं को उस ने मारा नहीं प्रत्युत अपना कर दाता बना लिया। उस की शक्ति इतनी बढ़ गई





थी कि कामरूप (अमान) कुमाऊँ, और मालवा आदि के कई राजाओं ने स्वयं ही उसे कर देना आरम्भ कर दिया और उस में निवृत्ता कर ली।

अश्वमेध यज्ञ—महद्गुप्त जहाँ गया वही उनकी विजय हुई। नौसेना-सम्राट् चन्द्रगुप्त के पञ्चान इनकी ममृद्धि अन्य किसी राजा की नहीं हुई थी। विजय और सम्पत्ति की दृष्टि से वह अश्वमेध का पूरा अधिकारी हो गया था। राजधानी को लौट कर उस ने यज्ञ का पूर्ण प्रदन्ध किया। चारों दिशाओं के वैदिक विद्वान राजधानी में एकत्र हुए। उनकी रज्जणा के लिए सम्राट् ने विशेष रूप से सोने के सिंहे बनवाए। उन पर यज्ञ के घोड़े का चित्र था। ये निश्चय उस ने उन राज-सेवकों को भी बोधे जो भयानक युद्धों में उस के साथी थे। उन के अश्वमेध की बड़ी धन थी।

[illegible]

महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई

समुद्र-हीरो पर मुद्रा का नमूना—
 व्यापक के लिए—
 सारे हीरो के लिए—

उन द्वीपों में है कि जहाँ भारतीय लोगों का राज्य था । ये द्वीप चम्पा आदि हैं ।

उस समय मसार भर में समुद्रगुप्त के महारा दूसरा योद्धा न था । वह अफगानिस्तान में परे मामानियन राजा को हरा सकता था, परन्तु वह पका आर्य था, निरा साम्राज्यवादी नहीं था । वह तो वर्मानुसार विजय कर रहा था । आर्य-धर्मशास्त्र में भारत में परे जाना पाप है, अतः वह वर्मशास्त्र के विरुद्ध नहीं गया । चम्पा आदि द्वीप और अफगानिस्तान तक क प्रदेश भारत में ही थे, अतः उन सब का वह एक-मात्र सम्राट् हो गया ।

संस्कृत विद्या की उन्नति—राजाश्रय के बिना विद्या उन्नति कठिन हो जाती है । कनिष्क के काल में आर्य-शास्त्र का ह्रास हो रहा था । भारशिवो ने उस ह्रास को रोका । न्याय और वैशेषिक शास्त्र के अनेक टीका ग्रन्थ शैवाचार्यों ने उन्हीं दिनों लिखे होंगे । समुद्रगुप्त के काल में ता संस्कृत की उन्नति बहुत बढ़ी । वह स्वयं विद्या और कला का प्रेमी था । मगीत और वीणा का उसे बड़ा प्रेम था । उस के कुछ मिकों पर दिखाया गया है कि वह बैठा हुआ वीणा बजा रहा है ।

चन्द्रगुप्त दूसरा (विक्रमादित्य)—लगभग ४५ वर्ष राज्य कर क सन २७५ में समुद्रगुप्त परलाक सिवारा । उस का उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त द्वितीय था । कई ग्रन्थों में इस का नाम विक्रमादित्य लिखा है । समुद्रगुप्त के जीवन का आधकाश भाग युद्धों में बीता था । वह प्रजा की ओर यथाचित ध्यान नहीं दे सका था । उस का राज्य सुख का राज्य था । पर चन्द्रगुप्त द्वितीय ने प्रजा का इतना ध्यान किया कि प्रजा-जन उस से अत्यधिक प्रेम करने लग पड़े । वह न्यायाप्रेम भी पूरा था ।

कई लोगों का मत है कि यही चन्द्रगुप्त (विक्रमादित्य)
 विक्रम सम्बन् वाला प्रसिद्ध विक्रमादित्य है । इसी के
 राज-दरबार में कालिदास, वराहमिहिर आदि विद्वान् रहते
 थे । यह बात सत्य नहीं । गुप्तों का अपना सन् है और उस
 सन् का विक्रम सन् से कोई सम्बन्ध नहीं । दूसरे लोगों का
 मत है कि उज्जयिन का प्रसिद्ध विक्रमादित्य सातवाहन वंश का
 कोई राजा था । यह बात कुछ अधिक जँचती है । परन्तु इतना
 तो सत्य है कि गुप्त विक्रम का विक्रम सन् वाला, विक्रम से
 कोई सम्बन्ध नहीं ।

फाहियान—कनिष्क के काल से चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार हो रहा था। चीन के लोगों की भारत में बड़ी श्रद्धा हो गई थी। अपने धर्म के मूल-तत्वों को जानने के लिए और अपने धार्मिक तीर्थ-स्थानों को देखने के लिए अनेक चीनी भारत आने के लिए लाता-हित थे। उन में से अधिक सप्तमी लोग समय समय पर भारत प्रांच करने रहते थे। फाहियान उन सब में पहिल हैं। उनसे अपने भारत प्रांच के अनुभवों का लिखा था। जिससे बहुत कुछ चीन के लोगों को पता चल गया। उससे वे बहुत कुछ सीखे। वह घर से अपने शिष्यों को भेजकर भारत प्रांच करने के लिए कहते थे। इससे भारत में बहुत कुछ चीन के लोगों का आना हुआ। जान लो वह अनेक चीन प्रभु, राजा, मंत्री, आदि

भारत-वर्षाने फलदायक है।
कोई व्यक्ति उत्तम है।
अशोक के राजासदृश शासन का उदाहरण है।
एवं तथा भारत के शीतल का सुखाना है।

हैं। भिन्न लोग उन में निवास करते हैं और अपने ग्रन्थों का पठन-पाठन करते रहते हैं। भिन्न-भिन्न मतों में द्वेष नहीं है। भारत के लोग सुखी और धनवान हैं। दान का बड़ा प्रचार है। उसी दान से अनेक आतुरालय चलते हैं। टैक्सों का भार कम है। दण्ड-नियम कड़े नहीं हैं। फौसी के दण्ड का तो सर्वथा अभाव है। बार-बार के अपराधी का हाथ काट दिया जाता है। साधारण अपराधों के लिए जुर्माना होता है। बाजारों में माँस नहीं बिकता। न कोई शराबी दिखाई देता है, और न शराब की दुकानें। सड़के सुन्दर और आरामवाली हैं। प्रबन्ध इतना अच्छा है कि चोर या डाकुओं का कहीं चिह्न-मात्र भी नहीं पाया जाता। फाहियान का खीचा हुआ भारत का चित्र एक स्वर्गीय युग का पता देता है। चन्द्रगुप्त दूसरे ने लगभग ४० वर्ष राज्य किया।

कुमारगुप्त (महेन्द्रादित्य)—सन् ४१५ में कुमारगुप्त राज्याधिकारी हुआ। गुप्त-साम्राज्य के वैभव को उस ने कम नहीं होने दिया, प्रत्युत कई एक नवीन प्रदेशों को जीत कर उसने एक अश्वमेध यज्ञ किया। उस अवसर पर उसने अपना सोने का सिक्का प्रचलित किया। वे सिक्के अब भी कहीं कहीं मिले हैं। इस के राज्य में पहले तो शान्ति रही, पर जब यह वृद्ध हुआ तब हूणों ने भारत पर भयङ्कर आक्रमण किया।

हूणों का आक्रमण—तिब्बत के एक पुराने ग्रन्थकार ने इस आक्रमण के सम्बन्ध में लिखा है—महाराज महेन्द्रसेन (कुमारगुप्त) का जन्म कौशाम्बी के प्रदेश में हुआ था। उनका एक पुत्र अत्यन्त बाहुबल वाला था। जब वह कुमार बारह वर्ष का हो चुका तो तीन विदेशीय शक्तियों ने महन्द्र के राज्य पर आक्रमण किया। वे

करते थे, जो स्त्री, बाल और वृद्धों को भी मार देते थे ; वही हूण भारत में स्कन्दगुप्त के कारण कुछ देर के लिए दब गए । उनकी बढ़ती हुई बाढ़ का रोक देना स्कन्दगुप्त का एक महान कार्य था ।

स्कन्दगुप्त का राज्य कम से कम ४६७ ईस्वी अर्थात् बरह वर्ष तक रहा । इतने वर्षों के उस के सिक्के मिल चुके हैं ।

स्कन्दगुप्त के पश्चात्—स्कन्दगुप्त के पश्चात् गुप्त साम्राज्य क्षीण होने लग पड़ा । उस की कई शाखाएँ हो गईं । अनेक शाखाओं में विभक्त होने के कारण राज्य-शक्ति बँट गई । स्कन्दगुप्त का उत्तराधिकारी बुधगुप्त था । वह सन् ४६६ में राज्य कर रहा था । उसी के काल में गुप्त साम्राज्य का हाम आरम्भ हुआ । वह लगभग सन् ५०० तक राज्य करता रहा । उस के पश्चात् सन् ५१० में द्रुमरी वार हूणों ने भारत पर आक्रमण किया, और ग्वालियर तक का प्रदेश उन्होंने ले लिया ।

हूण पन्द्रह सोलह वर्ष तक पश्चिमोत्तर भारत में अपना आधिपत्य रख सके । उन का राजा तोरमाण था । हूणों ने शाकल या ग्वालकोट का अपनी राजधानी बनाया हुआ था, और वही से वह सारे भारत में लूट मार का काम करना चाहते थे । तोरमाण का पुत्र मिहिरकुल था । बालादित्य द्रुमरी ने एक बार इस मिहिरकुल को काश्मीर में भगा दिया था ।

इस प्रकार गुप्तों की वह शक्ति जो आर्य धर्म के लिए आर्य सभ्यता की रक्षा के लिए उठी थी, जिस ने कुशन राज्य का अन्त कर के भारत को सुख की साँस लेने का समय दिया था जिस ने योंरूप और चीन तक पहुँची हुई अजेय हूण शक्ति का सहार किया था, जिस ने सभ्यता

भापा का फिर एक चक्र चला दिया था, वही दुर्गन्त शक्ति भारतीय इतिहास के रंगमञ्च पर अपना असाधारण काम कर के प्रशान्त हो गई। यह छठी शताब्दी ईसा का मध्य-काल था

चौदहवाँ अध्याय

यशोधर्मन् और थानेसर के मौखरी या वर्धनकुल

यशोधर्मन् विष्णुवर्धन—यह एक बड़ा प्रतापी राजा था। इसके वंश का कोई निश्चित पता नहीं लगा। जायसवाल का मत है कि इसके नाम के साथ लगी वर्धन उपाधि बताती है कि संभवतः यह हर्षवर्धन का ही कोई पूर्वज हो। उसके दो शिलालेख मिले हैं। मन्दसोर का शिलालेख बड़ा प्रसिद्ध है। संभव है मन्दसोर उसकी राजधानी हो। मन्दसोर का लेख एक विजय-स्तम्भ पर है। उसका आशय यह है कि—जा देश गुप्त राजाओं तथा दूतों के अधिकार में नहीं आए थे उनका भी उसने अपने अधीन किया। ब्रह्मपुत्र नदी से महेन्द्रपर्वत (भारत के पूर्वी विभाग के पूर्वी प्रांत) और हिमालय से पश्चिम में समुद्र तक के स्वामियों को अपने सामन्त बनाया और राजा मिहिरकुल ने भी जिसने इन्हें सिखा किना के आगे मिर नह नुक प्र य उसक चरणों में अपने मस्तक नमाया अथान उसन हर । यह लेख सन ५२० के समीप का है।

जिस राजा ने इतनी विजय का उस शिलालेख में परमेश्वर और 'राजाविराज लिख' है यशोधर्मन् ने इतने मंत्र चक्र निर्माण करके साम्राज्य के भव के नाश नहीं होने दिया और

इतिहास में हर्ष के श्रीहर्ष और शिलादित्य आदि नाम भी प्रसिद्ध हैं। हर्ष बड़ा वीर पुरुष था। वह शशाङ्क को हरा कर ही मनुष्य नहीं हुआ। उसने नर्मदा नदी तक सारे उत्तरी भारत पर अपना अधिकार जमा लिया। पूर्व में उसका राज्य आनाम की सीमा तक पहुँचा हुआ था। आनाम के राजा की उस से बड़ी मित्रता हो गई थी। स्वानुवाङ्मय लिखता है कि उस की सेना में पचान सत्स पदाति, बीस सहस्र अश्वारोही और पचान सहस्र हाथी थे। ऐतिहासिक लोगों का मत है कि पञ्चाय और राजपूताना के अतिरिक्त हर्ष के राज्य में सारा उत्तरीय भारत और मौर्य सम्मिलित था। सन् ६०० में हर्ष ने दक्षिण की ओर चढ़ाई की। वहाँ उस का युद्ध चानुक्य-वंशी पुलकेशी द्वितीय के साथ हुआ। इन युद्ध में हर्ष हार गया।

भट्ट बाण — सन्त का प्रसिद्ध मवि बाण हर्ष के ही दर-
बार की गोभा बनता था हर्ष को विद्वानों से बहुत प्रेम था।
बाण के निवेदन पर भी उनके पण्डित उस के आश्रित होंगे बाण
कवि के दो सन्त — यन्त्र न न कद भी मिलते हैं एक है गुरुद्वारा
और दूसरा है गुरुद्वारा के सन्त के सन्त सन्त सन्त है और
हर्षचारित में हर्ष के सन्त के सन्त सन्त सन्त है और
हर्ष स्वयं भी वन्त के सन्त के सन्त सन्त सन्त है
अज्ञानों में वन्त के सन्त के सन्त सन्त सन्त है

हृषीकेश धन — ३०

बहुत दान पुण्य होता था। जिस प्रकार प्राचीन राजा यज्ञों के अन्त में बहुधा अपना सारी सम्पत्ति दान कर देते थे, इसी प्रकार प्रयाग के मेले में बड़ सारा निजी धन बौद्ध, जैन, और ब्राह्मण तथा अन्य निर्वन लोगों को दे दिया करता था।

य्वानच्चाङ्ग या ह्युनसांग की भारत-यात्रा—सन् ६३० में यह चीनी-यात्री भारत पहुँचा। वह यहाँ पन्द्रह वर्ष रहा। सन् ६४५ में वह चीन को लौट गया। उसने अपने भारत-भ्रमण का वृत्तान्त एक ग्रन्थ में लिखा है। हर्ष के राज्य के सन्दर्भ में वह लिखता है—

कन्नौज बड़ा शक्तिशाली नगर है। पाटलिपुत्र का नगर अपना पुराना ऐश्वर्य खो चुका है। हर्ष का राज्य-संचालन बहुत उत्तम है। राज्य का सारा काम हर्ष की देख रेख में होता है। चातुर्मास्य में भी राजा पूरा निरोक्षण करता रहता है। दण्ड-नियम कड़ा है। भयङ्कर अपराधों के बड़े शरीर के अङ्ग काट दिए जाते हैं। भले पुरुषों को मरुमर्माँ के लिए इनाम भी मिलते हैं। दैक्य बहुत कम है। मङ्गलों पर कड़ी कड़ी चोर और डाकू मिलते हैं, पर साधारण-तया माग मुश्किल है। हर्ष को फाहियान के काल ऐसी सड़के नहीं मिलीं। लागा का घर न जीवन सरल और स्वच्छ है। माँस बहुत कम खाया जाता है। राजा ने माँस-भक्षण को रोक दिया है। इस यात्रा का न मानने वालों को कठोर दण्ड दिया जाता है। शिक्षा का बड़ा प्रचार है। कुलीन स्त्रियाँ भी शिक्षित हैं। वे परदा नहीं करती। विद्वान और पण्डित लोग राजाओं से भी अधिक पूजे जाते हैं। सर्तों की प्रथा प्रचलित है। बालविवाह दिखाई नहीं देते। यात्रियों के लिए धर्मशालाएँ पर्याप्त हैं। किसान अपनी उपज का छठा भाग कर क रूप में देते हैं।

नालन्ड का विश्वविद्यालय—इण्डो के दमनशील राज्य के कारण नजशेला का विश्वविद्यालय निर्वलावन्था में आगया था । अब नालन्ड ही विद्वानों का जमघट स्थान था । नालन्ड में ही हूननाग ने शिक्षा पाई । उसका गुरु शीलभद्र उस समय अत्यन्त वृद्ध था । शीलभद्र वीतराग और उच्चकोटि का विद्वान् था । वह नालन्ड का आचार्य था । उनका गुरु वर्मपाल युवावस्था में ही मर चुका था । एक बार जब हप ने दरबार लगाया, तो शीलभद्र वहाँ निमन्त्रित किया गया । राजा हप उस भिक्षु के सिर पर छत्र किए स्वयं नंगे पाँव चल रहा था । विद्वानों के प्रति इसी असीम श्रद्धा के कारण उन समय विद्या बहुत बढ़ रही थी ।

हर्ष-सम्बत्—भारतवर्ष में हर्ष-सम्बत् के नाम से एक संवत् चलता रहा है। वह संवत् इमी राजा हर्ष का संवत् था। इस संवत् का प्रारम्भ हर्ष के राज्याभिषेक के दिन से हुआ था। ३०० वर्ष तक यह संवत् मध्यभारत प्रादि में चलता रहा मग जब ईसा के पाँचवीं शताब्दी में यही संवत् दिया हुआ है।

[illegible]

43-4



हर्ष की मृत्यु—सन ६४७ में हर्ष की मृत्यु हुई। उस के छोटे पुत्र न था। उस के मन्त्री अश्वमेध ने कन्नौज का सिंहासन अपने अधिकार में कर लिया। वह बहुत शक्ति-शाली न था। सत्त राज्य-व्यवस्था स्थिर न रही। हूणों ने पुन अपने आक्रमण आरम्भ कर दिए। भारत में अनेक छोटे छोटे राज्यों की उत्पत्ति होने लगी। विशाल साम्राज्य का विचार अब स्वप्न हो गया।

पंद्रहवाँ अध्याय

विशाल भारत

गत अध्यायों में हमने अरुणानिलान का अनेक बार उल्लेख किया है। यह प्रदेश भारत का ही एक अङ्ग माना जाता था। पूर्व में भारतीय सीमा कहाँ तक थी, इस का अधिक बखान नहीं किया गया। कुछ वर्ष पहले हम उस जन-प्रमाण के ही नहीं बड़ो इत हास-लेखकों के मतों के साथ ही भारत की सीमा आसाम पर बङ्गाल तक ही थी, अब यह विचार संभव पनट गया है। कन्नौज दिया जावे, मध्य आदि अनेक प्रदेशों में स्मृत के स्थल मिले हैं। चीनी यात्री मा लिगने ने कि इन प्रांत में भारतीय राज्य ही था। गुजरात महान अरु बड़ो अरु न नगर नगर पर बहुत स लोग बहा गए। महामारन अरु ग्रन्थों में भी इन द्वीपों की भारतीय ही माना गया है अतः उन के मान्यता इतिहास दिए बिना इतिहास का लिखना अपराध हो रहता है। इन द्वीपों में अब भी कहीं कहीं हिन्दू धर्म का प्रचार है।

अपने देश को लौटते समय यहाँ भी ठहरा था। उस ने लिखा है कि यहाँ के लोग बहुत समृद्ध हैं और वे हिन्दू धर्म को मानते हैं। नानावी शताब्दी में दशौं जैनेन्द्र नाम के एक राजवंश का उदय हुआ। वह दश बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया। और उसने बौद्ध धर्म के प्रचार में बड़ा भाग लिया। जैनेन्द्र राजाओं ने बवट्टोप में अनेक मन्दिर और स्तूप बनवाए। उन में से चोरो-वटर नाम का स्तूप अपनी कारीगरी के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ है। इन की कला के विषय में विश्रय किया जाना है। यह नमार के अत्यन्त सुन्दर और दिग्गल स्तूपों में से एक है। इन द्वीपों में इन समय सुनसमान वाद्वत हैं जो वायु जकल डच लोगों के अग्रोन है

सुमात्रा का प्राचीन नाम - बवट्टोप
मे श्रीविजय नाम का एक
कि— सुवर्णद्वीप का नाम
द्वीप तक चलते हैं यह नाम
बौद्ध धर्म के साथ सम्बन्ध

बोनियो—बवट्टोप
द्वीप है। यह भी विष्णु के
द्वीपों में से यही के समुद्र
शताब्दी के समाप का
वस्तुका नाम मूलवर्मा के
हिन्दू थे।

लङ्का और बर्मा—
और अब भी है। बौद्ध धर्म
विष्णु ने भारत का अङ्ग

कन्नौज के प्रतिहार—एक वंश पतन कन्नौज की उन्नति नष्ट हो गई। उनका पतन धना गया। उनके विशाल भवन और राजागृह आदि ध्वस्त हो गए। उनके राजा भारतीय राजाओं से दूर मान्य थे।

सन ७४८ के सर्वाप कन्नौज का राज्य गधुवशी प्रतिहारों के हाथ में चला गया। उनका पहला राजा नागभट्ट था। उसके जग में चौथा राजा बन्मराज था।

बन्मराज—इस राजा की विजय गौट और चङ्गल तक हुई। जब उसने मालवे के राजा पर चढ़ाई की, तब मालवराज की सहायता के लिए राष्ट्रकूट ध्रुवराज आ गया। वहाँ इसे हार हुई और वह मल्लेख (मालवा) को लौट आया। वह राजा गैव था। इसी राजकाल में सन ७८३ में दिगम्बर जैन आचार्य जिनमल न द्विविज पुराण लिखा।

भोज—(८४८ ई०) वह भगवन्त का उपामक था और अपने जिलाजग पर ब्रह्म का मान प्रदर्शित था। इसने उत्तर कन्नौज का भाग अपने राज्य में मिला लिया। इसका राज्य उत्तर भारत में फैला हुआ था। सुचरन में इसका राज्य की सीमा जल तक थी। इसका बेटा पन्द्रहवाँ राज नेपाल या राज्यपाल था। सन १०८८ में महम्मद गजनवी ने उस पर आक्रमण किया था।

गुजरा—इस समय गुजरात गुजरात नाम से जाना जाता था। उसने अपना निवास करत है परन्तु पहल उसका कट बड़ा था। इन्हीं राजाओं के अधीन हानि से माराष्ट्र के पुराने देश गुजरात नाम से बोला जाना लगा। इसी की सन्तती आर्य और नौवीं शताब्दी में इनका अन्त्य प्रभुत्व रहा। राजपूताना में

पारसियों का भारत आगमन—इसके मुहम्मद की हत्या के २० वर्ष परवन्ही सीरिया, पैर्सिया मिश्र और ईरान पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। जो विभिन्न मुसलमान नहीं होता था उसे मुसलमान बना कर देती थी। इस प्रकार मुसलमानों का भय जारी और बढ़ने लगा। उसी दिनों ईरान के सैकड़ों पारसी कुल अपने अपने की रक्षा के लिए भारत के मुसलमानों के नगरों और देश के आक्रमण कर रहे थे।

मिश्र पर मुसलमानों का आक्रमण—जरीदा और का कल करके हुआ। इनके हाकिम इनके ने महुडी नगर में एक बड़ा मुस्लिमों को और भेजी। जरीदा ने उस में ही सीधे हुए में ही शरण ले। जरीदा और जरीदा के भ्राता ने महुडी को रंग में भेजी नगरों में जरीदा और जरीदा को महुडी के राजा। ने उस में मुस्लिमों। मुसलमानों में महुडी

जरीदा और जरीदा के भ्राता ने महुडी को रंग में भेजी नगरों में जरीदा और जरीदा को महुडी के राजा। ने उस में मुस्लिमों। मुसलमानों में महुडी

के कारण वे देशद्रोही बन गए। देवल के मार्ग में एक विशाल मन्दिर था। मुहम्मद कासिम ने मन्दिर को तोड़ दिया और १७ वर्ष से अधिक आयु के समस्त ब्राह्मणों को मार डाला, बालक तथा युवतियाँ कैद की गईं। केवल वृद्धा स्त्रियाँ छोड़ दी गईं। अब कासिम दाहिर के दुर्ग की ओर बढ़ा। दो देशद्रोही लोभी बौद्धों ने दुर्ग के गुप्त-मार्ग तथा रहस्य कासिम को बता दिए। जब राजा को विश्वास हो गया कि अब बाहर निकलने बिना काम नहीं चलेगा, तो राजा ५०००० राजपूत, सिन्धियों और मुसलमान योद्धाओं (जो उस की सेवा में आ चुके थे) के साथ आगे बढ़ा। मुसलमान अपने मोर्चों से न निकलते थे। राजा ने वाधा बोल दिया। अरब पिन्ड रहे थे, इसी समय महसा राजा को तीर आ लगा। उस ने साहस नहीं त्यागा वीर क्षत्रिय आगे बढ़ता गया और रणक्षेत्र में ही मर गया।

दाहिर की रानी वीर क्षत्राणी थी। अपने पति का आत्मग्रहण करके उसने युद्ध जारी रखा। अन्त में रानी की सेना ने पाम का अन्न समाप्त होने लगा। हिन्दू-स्त्रियों ने अन्तिम आग जलाई और चिताओं में प्रवेश करके जल गईं। अपने सैनिकों सहित रानी रणक्षेत्र में उतरी और वही वीरगति का प्राप्त हुई।

मुसलमानों ने सिन्ध में आगे राजपूताने की ओर बढ़न चाहा, पर राजपूतों की वीरता के कारण वे उद्यम न बढ़ सके और कुछ काल के लिए सिन्ध में ही पड़े रहे।

मगधवाँ अध्याय दक्षिण के राज्य

ऊपर और नीचे की दृष्टि में दक्षिण दो भागों में विभक्त हो गया था। उत्तर में दक्षिण में तुङ्गभद्रा नदी तक ऊपर का और मालावार तक शेष प्रदेश नीचे का भाग था। हर्ष के पश्चात् भारतवर्ष साम्राज्य के नष्ट होने ही दक्षिण के दोनों भागों के अनेक राजा स्वतन्त्र हो गए। उन्होंने अपने अपने राज्यों को बट भी बना लिया। उन में से कुछ एक ऊपर के दक्षिण के प्रधान राज्य निम्नलिखित थे—

चालुक्य राज्य—आधुनिक बीजापुर जिले में वातापि (=वाशिम) नामक एक नगर था। सन् ४४० के समीप वह एक राजपूत वंश के अधीन में चला गया। इस वंश के आदि पुरुष पुलकेश प्रथम थे। पुलकेश ने कई युद्धों में विजय प्राप्त की और अध्वमय यज्ञ करवाया। उसका योग्य पुलकेश द्वितीय (सन् ६०८-६४९) बड़े से जमीन के इसी पुलकेश ने दक्षिण की ओर बढ़ते नगरों के साथ-साथ वह क्षेत्र स्वयं वार था और एक बड़े से राज्य बनाया। परन्तु कुछ अध्वमयों के समय अपने राज्य में विद्या की बड़ी उन्नति हुई। उसी के काल में पञ्चव वंश भी बड़ी उन्नति कर रहा था। उसका इन्द्र के श्वा था। सन् ६७० में पल्लव राजा ने पुलकेश की हराकर उसका राज्य ले लिया। कुछ काल पश्चात् चालुक्य पुनः शक्तिशाली बन और उन्होंने अपना राज्य फिर प्राप्त कर लिया।

चोल राज्य—इस देश का पुराना नाम चोलमण्डल था।

कावेरीनदी इसका प्रमुख नदी है। पाण्ड्य लोगों के सहस्र चोल लोग भी इस देश के मार्ग में पड़िमी देशों के साथ व्यापार करने थे। इन के वहाँ बड़े जहाज थे, जो समुद्रों में दूर दूर तक जाते थे। मिलाकर के व्यापार पर इन लोगों ने अधिकार कर रखा था। इस देश के महाराज राजराज (सन १०१५—१०१९) ने तमिल, मैसूर और मद्रास तक का देश जीता था। इस का साम्राज्य अत्यन्त विस्तृत था। इस देश के किमी वीर राजा के राज्य में रहकर ही आचार्य वेङ्कट माधव ने लगभग ग्यारहवीं शताब्दी में अपना अष्टावक्र का प्रसिद्ध भाष्य रचा था। ये राजा शिव भक्त थे। राजराज चोल का पुत्र राजेन्द्र चोल था। उस ने लगभग सन १०३४ तक राज्य किया। वह भी एक वीर योद्धा था। अपने देश की स्वतंत्रता की उन्नति के लिए उस ने एक विशाल झील बनवाई। वह अपनी प्रजा को बहुत सुख देता था। पाण्ड्य और चोल राज्यों में सदा युद्ध होते रहते थे। इन युद्धों में दोनों राज्य बहुत जीराण हा गये और अन्त में १३१० ई० में मलिक काफूर ने इन दोनों राज्यों को नष्ट कर दिया।

पल्लव वंश—पल्लव वंश इतिहास में अभी अभी लिखा गया है कभी इस वंश के बड़े राजा थे। इन की राजधानी काञ्ची थी। प्लान्चवङ्ग के राजा थे। वह लिखते हैं कि बौद्ध भिक्षु देश सहस्र की संख्या में इस नगर के विहारों में रहते हैं। पल्लव राजा भी चालुक्यों से युद्ध करते रहे और अन्त में चालुक्यों के अधीन हो गए। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में इस वंश के उन्मूलन हुआ गया।

रामानुज—तीसरी चौथी शताब्दी में इस नीच के राजा में

मौर्य सम्राट् राजा एवम् ही माने थे। उन दिनों अन्य देशों में भी
 वहाँ के स्थिति साम्राज्य में, अन्य भारत-
 युद्ध में समग्र ही दृष्टि के। अन्य राजा दोनों पक्षों में किसी
 एक पक्ष में ही रहने के लिए युद्ध में लगे। उनसे पश्चात् इतिहास
 के लक्ष्य में साम्राज्य प्रसिद्ध है। इसी साम्राज्य के भय से सिक-
 न्धर मगध विजय भी भारत में फैला ही लौटा। नन्हीं के पश्चात्
 मौर्य शासक, सातवाहन, भारगुप्त, और गुप्त वंश के सम्राटों ने
 भारत में विभाग और गतिगती साम्राज्य स्थिर रखा। इन्हीं
 साम्राज्यों के अतुल्य बल के कारण विदेशी लोग बार बार यत्र
 रहने पर भी निराला तब पलायन में भी नहीं टहर सके। हर्ष
 वर्धन तक यह परम्परा चलती गई। हर्ष के पश्चात् साम्राज्य का
 विचार हीला पड़ने लगा। आठवीं, नौवीं और दसवीं शताब्दी में
 यह विचार सर्वथा जीव हो गया। दसवीं शताब्दी के अन्त में
 साम्राज्य के इसी अभाव के कारण विदेशी यहाँ पर सफल हुए।

२. घरेलू युद्ध और मित्र-शक्तियों का अभाव—अनेक
 छोटे-छोटे राज्यों के अन्तर्गत ही जन समूह युद्ध बहुत बड़े
 हुए थे। पिछले युद्ध में साम्राज्य में गया है। एक राजा के राज्य
 किस प्रकार परभय के लक्ष्य में रहता है। वेम ही आपस में
 लड़ना मौर्य भारत में विद्यमान था। नन्हीं महत्त्व के युद्धों में
 आक्रमण हुआ तो लड़ने के राजा के दो चार अन्य राजा
 नहीं सहायता दी। अतः विदेशी बड़े लोभालू राजा के
 लोभ आतन्त्र में अपने पर बैठ रहे। सिकन्दर जब भारत
 में आया तो आते ही उन न अन्धा अन्ध कड़े राजा का
 अपना मित्र बना लिया। अपना मित्र शक्तियों के बड़े युद्ध
 नहीं लड़े जाते। सिकन्दर इस रहस्य का ज्ञान था। परन्तु

ज्योतिष—गणि और नक्षत्रों का ज्ञान, सूर्य और भूमि वृत्तों का ज्ञान आर्यों को वैदिक काल में ही था। सूर्य का स्थिति के कारण ही है, ऐसा ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है। आने-सूर्य-ग्रहण और चन्द्रग्रहण को आर्य लोग बहुत शीघ्र लेते थे।

आर्य भट (पाँचवीं शताब्दी), बराहमिहिर (छठी शताब्दी) भास्कराचार्य (बारहवीं शताब्दी) आदि विद्वान् इस ज्ञान उच्चकोटि के पण्डित हुए हैं।

गणित—गणित के अनेक विभागों में आर्यों की बहुत पहले ही चुकी थी। एक जर्मन विद्वान ने लिखा है कि प्लेटो गोरम में कई सौ वर्ष पहले आय जानते थे कि समकोण त्रिभुज की लम्बी भुजा (कर्ण) का वर्ग जेप दोनों भुजाओं के वर्गों के तुल्य होता है। आय लोग अपने यज्ञों में ज्यामैत्री की मद्दत में अनेक काम करते थे।

अथ शास्त्र—अथ-शास्त्र का वर्णन पहले आ चुका है। विशा भार्गव में बहुत अनेक हैं। कौटिल्य के अथ-शास्त्र में पृथक् अनेक अध्यायों में इस विषय पर अनेक ग्रन्थ लिखे थे।

दण्ड शास्त्र—दण्ड शास्त्र गिनती में छह हैं। गौडन्य के शास्त्र के बाद के वेदों के शास्त्र कपिल का शास्त्र पतञ्जलि का शास्त्र वेदान्त का शास्त्र और कावदन्त शास्त्र। ये शास्त्र समय-समय पर बने थे। कर्त्तृ मूल शास्त्र शास्त्र बहुत ही नये हैं। इन्हीं दण्डों के तहत आय विद्वान् बीड़ा और नाना शास्त्रों को करते थे। वेदों के तहत शास्त्रों के अनेक हैं। यह नक्षत्र युद्ध भारत में कई स्थानों तक रहा। छह शास्त्रों पर कई भाष्य और टीकाएँ रहीं।

इन ग्रन्थों की पटकथा आज भी बड़े-बड़े विद्वान आश्चर्यान्वित हो जाते हैं।

स्मृति-ग्रन्थ—वैदिक काल के अन्त में ही धर्मशास्त्र रचे गए थे। परन्तु उन के वर्द्धनमान्तर पीछे से होते गए। इन के आधार पर कई नए श्रौत-वद्ग स्मृति ग्रन्थ बने। मनुस्मृति पहले में ही श्रौतों में है पर इस में अनेक प्रज्ञेय हुए हैं और कई श्लोक निरुल भी गए हैं।

कला-कौशल—अब तो कला-कौशल के भी अनेक पुराने ग्रन्थ मिलने लग पड़े हैं। मूर्ति-कला वास्तु-कला और शिल्प की दूसरी शाखाओं पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए थे।

नाटक—बहुन पुराने काल में भारत में नाटक खेले और रचे जाते थे। शुद्ध पुष्पमित्र का पुराहित पतञ्जलि अपने महाभाष्य में लिखता है कि नाटक खेचने वाले कस-बध का नाटक दिखाते हैं। अश्वघोष कालिदास और भवभूति की रचनाएँ मनार-प्रसिद्ध हो गई हैं।

कथा, कहानी—कथा कहानी के ग्रन्थों का विस्तार भारत में ही हुआ है। मन्त्रादिग्रन्थों के कदम्ब यहाँ बने। पंचतन्त्र और हितोपदेश नाम के ग्रन्थ हैं। राचवा मदा में इन कथाओं का अनुवाद मौर्य के समय में हो गया था। कथा-सहित्य' गार भी कथाओं का एक स्रोत है। इनके मूल गुणों के ग्रन्थ था, जो अब नष्ट हो चुका है।

शिक्षा—आयावन्त में 'शत्रु' का बड़ा प्रचार रहता है। उनपट्ट काल का एक राजा कहता है 'मर दश में एक भी अवद्वान नहीं है।' गुप्तकुला का प्रचार अत्यधिक था। उन्होंने गुप्तकुलो और ऋषियों के आश्रमों में विद्यार्थी लाए पढ़ते थे। ब्राह्मण भी

बौद्ध-काल में भी ब्राह्मण लोग अपनी शिक्षा देते रहते थे। राजा लोगों के दरबारों में बड़े बड़े विद्वान रहते थे।

इन सब नास्तिक और गिना के होने हुए भी राजनीतिक निर्वलता के कारण हिन्दू-धर्मता के ग्राम में चले गए।

दीर्घा अध्याय

राजनी के सुलतानों के आक्रमण

अरबों का उत्कर्ष और पतन—अरब लोगों ने एक ओर जहाँ सिन्धु को विजय किया वहाँ दूसरी ओर योरोप में उन्होंने स्वेन तक अपना साम्राज्य फैलाया। स्वेन की बड़ी-बड़ी मसजिदें आज भी बालुतला का एक अन्धा नमूना हैं। अरबों का यह साम्राज्य देर तक नहीं रह सका। एक ही शताब्दी में उस में निर्वलता आ गई। अरब स्वभाव में ही विलास-प्रिय थे। इतने भारी साम्राज्य को बना कर वे ऐश्वर्य को सह नहीं सके। भोग-विलास में पड़ कर उन्होंने अपना मही शक्ति को नष्ट कर दिया।

तुर्कों का उदय—तुर्क के मूल स्थान मध्य एशिया के पहात जगता हैं। अरबों के समय में वे कुछ समय हुए और उन्होंने उन्नति करने की टाँकी मसजिदें और युद्धों में एक स्वतन्त्र सुसलमान राज्य स्थापित हो चुके थे। वहाँ का अमीर अबुलमलिक था। उसने तुर्क अलमगीन के दरबार का नायब बनाया। अबुलमलिक की मृत्यु पर अलमगीन हा गजनी का स्वतन्त्र सुलतान बन बैठे। अलमगीन के पश्चात् उसका पुत्र इ सहाक ने गजनी का राज्य संभाला। अलमगीन के एक तुर्की

गुलाम था। उसका नाम था सुवुक्तगीन। वह इसहाक का नायब बना। इसहाक की मृत्यु के पश्चान्न सन् ६७७ में सुवुक्तगीन गजनी का सुलतान बना।

सुवुक्तगीन का भारत पर आक्रमण—जयपाल से युद्ध— सन् ६७७ में सुलतान सुवुक्तगीन ने भारत पर आक्रमण किया। उस समय लाहौर में भीमपाल का पुत्र जयपाल राज्य करता था। सरहिन्द से लमगान तक और मुलतान से काश्मीर तक जयपाल के राज्य का विस्तार था। महमूद सुवुक्तगीन का पुत्र था। इस आक्रमण में वह अपने पिता के साथ था। लाहौर का राजा भटिण्डा के दुर्ग में रहता था। कुछ देर तक तो राजा अच्छा मुकाबला करता रहा, पर जब उसने देखा कि उसकी सेना की स्थिति अच्छी नहीं, तब उसने सन्धि का प्रस्ताव किया। महमूद सन्धि के विरुद्ध था, परन्तु पिता ने सन्धि कर ली। राजा जयपाल सन्धि की शर्त के अनुसार धन एकत्र करके सुलतान को देने के लिए लाहौर आया। वहाँ ब्राह्मणों ने उसे सन्धि का उल्लङ्घन करने की प्रेरणा की। क्षत्रिय इसके विरुद्ध थे। राजा ने सन्धि तोड़ दी। यह समाचार सुनते ही मुलतान फिर गजनी से निकला।

जयपाल युद्ध के लिए तैयार हुआ। उसने दिल्ली, कन्नौज और कालिंजर के राजाओं को भी अपनी सहायता के लिए बुलाया। यत्र करने पर भी जयपाल की पराजय हुई। उसकी भागती हुई सेना का मुसलमानों ने सिन्धु नदी तक पीछा किया। लूट का बहुत सा माल मुसलमानों के हाथ लगा। सुवुक्तगीन ने सिन्धु नदी तक के प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। पेशावर में अपना एक प्रतिनिधि छोड़कर मुलतान गजनी को लौट गया।

सुलतान महमूद—पिता की मृत्यु के पश्चात् महमूद गजनी राजमिहसन पर बैठा। उसने सारे अफगानिस्तान पर अपना प्रभुत्व जमाया। मध्य एशिया के सारे मुसलमानी राज्य उससे मैत्री करना चाहते थे। महमूद जान गया था कि भारत के राजा परस्पर लड़ते झगड़ते रहते हैं। उसे भारत के अथाह धन का भी पता लग चुका था। गजनी के साम्राज्य को मालामाल करने के लिए उसने उत्तरीय भारत पर १७ आक्रमण किए।

जयपाल का दूसरा युद्ध—सुलतान मुयुक्तगीन के चले जाने के पश्चात् राजा जयपाल फिर स्वतन्त्र हो गया था। सन् १००१ में महमूद ने उस पर आक्रमण किया। राजा ३० सहस्र पदाति, १२ सहस्र अश्वारोही और ३०० हाथी लेकर पेशावर के पास उससे आ भिड़ा। देव राजा के प्रतिकूल था। महमूद की विजय हुई। लूट का अगणित माल महमूद के हाथ आया। उस लूट के माल में १६ रत्नजटित कंठे भी थे। उनमें से जौहरियों ने एक का मूल्य १८००० सुवर्ण दीनार बताया। राजा जयपाल दो बार हार चुका था। अतः वह जीवन में निराश हो अग्नि में जन कर मर गया।

आनन्दपाल—जयपाल के पश्चात् लाहौर के राजमिहसन पर आनन्दपाल बैठा। सन् १००६ में सुलतान महमूद ने उस पर चढ़ाई की। आनन्दपाल ने उसने स्वतन्त्र कनिष्ठ राजाओं के देहली और अजमेर के राजाओं की मदद से 'पैर' आनन्दपाल पेशावर पहुँचा। पेशावर के पास ४० दिन तक दोनों सैन्य एक दूसरे के सामने पड़ी रहीं। युद्ध आरम्भ नहीं हुआ। हिन्दू सेना बढ़ती जाती थी। दर दर से हिन्दू महिलाएँ न अपना श्राभूषण देकर युद्ध के खजाने के लिए अपने अपने मूल्यवान् वस्त्रों को धनुष्य की आग में जला दिया। गजनी के सन्मुख हुए।

वीरता से लड़े कि मुसलमानों का साहस टूट गया। गक़्तरो ५००० मुसलमान क्षण भर में काट गिराए। जब आनन्दपाल की विजय निश्चित थी, तब एक गोला लगने से उसका हाथ भाग खड़ा हुआ। हिन्दू सेना हताश हो गई। उन्होंने समझा कि राजा ने पीठ दिखा दी है। सेना भी भाग निकली। जीता हुआ रणक्षेत्र हारा गया। महमूद को लूट में बहुत सी सामग्री मिली। लगभग २० सहस्र हिंदू मारे गए।

अब महमूद का साहस बहुत बढ़ गया। हिन्दुओं की थोड़ी सी सैनिक भूल के कारण विजय उसकी रही और वह उन की सम्मिलित शक्ति को परास्त कर सका। महमूद धन के विचार में ही आक्रमण करता था। अतः उसने वे सब स्थान दृष्टिगत कर लिए कि जहाँ से वह धन ले सके।

नगरकोट पर आक्रमण—नगरकोट काङ्गडे की पहाड़ियों में एक दुर्ग था। यह हिंदुओं का तीर्थ स्थान था। महमूद ने सुना कि काङ्गडे के मन्दिर में अर्माप धन है। वह अपनी सेना सहित उग्र बहा। उसकी सेना ने काङ्गडे के समीप का सारा प्रदेश उजाड़ कर दिया और दुर्ग का पर लिया। राजा ने कुछ देर तो युद्ध की तैयारी की, पर अतः महमूद की अधीनता स्वीकार करली। वहाँ से जवाहरान और चाँदा के दर के दर महमूद गजनी को ले गया।

मथुरा और कन्नौज—मथुरा का महमूद ने शीघ्र ही ले लिया उसका पञ्चान वह कन्नौज की ओर बहा। सन् १०१८ में वह कन्नौज पहुँचा। राज्यपाल प्रतिहार उस समय कन्नौज की नहीं पर था। राजा पर यह आक्रमण सहसा हुआ था। वह तैयारी न कर सका। प्रवेश कर वह गङ्गा पार चला गया।

मुलतान ने वहाँ के मान दुर्ग नष्ट कर दिए और अनेक लोगों को मरने के बाद इनारा । कन्नौज दुर्ग तरह से लूटा गया हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज अब अपना ऐश्वर्य खोने लगी ।

सोमनाथ पर आक्रमण—महमूद का सोलहवाँ आक्रमण सोमनाथ पर हुआ । वहाँ एक विशाल मन्दिर था । सोमनाथ की स्थिति गुजरात में समुद्र तट पर थी । इस आक्रमण का काल सन् १०२५ है । नाम महमूद सवारों के साथ महमूद ने गजनी से प्रस्थान किया । पहले वह मुलतान पहुँचा । वहाँ से मरुभूमि में से होता हुआ वह अन्हिलवाड़े पहुँचा । अन्हिलवाड़े में वह आगे बढ़ा । मार्ग में उसने बहुत से लोगों को मारा । वहाँ से चलकर वह देवलवाड़े पहुँचा । वहाँ से सोमनाथ दो पड़ाव दूर था । वहाँ के लोगों का विश्वास था कि सोमनाथ का देवता शत्रु को भगा देगा । वे लोग इन्हीं विश्वास के कारण नगर में भागे नहीं । महमूद ने नगर विजय करके लोगों को कत्ल किया और उनका माल लूट कर वह सोमनाथ की ओर बढ़ा ।

वीरवार के दिन वह सोमनाथ पहुँचा । उसने समुद्र तट पर एक सुदृढ़ दुर्ग देखा । समुद्र की लहर दुर्ग की दीवारों से टकराती थी । पहले हिन्दू लोग दुर्ग की दीवारों पर चढ़ कर बैठते थे । वे कहते थे कि देवता सब शत्रुओं का नष्ट कर देगा । शुक्रवार का मुलतान आक्रमण के दिन का यह दिन जब वह दुर्ग के विस्तृत पथ पहुँच गया और देवता ने इस रोकने का कुशल उपाय न किया तब हिन्दू निरपराधता के लिए वे एक बार अपनी परी शक्ति में लड़ें । महमूद कुछ देर रुक गया । उस की भाविष्य सन्देश पुक्त वाच्यन लग

दूसरे दिन महमूद ने अधिक इन्साह के साथ पुनः आरम्भ

किया। मन्दिर की रक्षा करने वाले द्वार द्वार देवता के सामने जा कर रोते थे और प्रार्थना करते थे। फिर वह युद्ध पण्डित जाते थे। इस प्रकार वे प्राणान्त तक लड़ते रहे। अन्त में जो थोड़े से बचे, वे नावों द्वारा समुद्र में चले गये। मुसलमानों ने समुद्र में जाकर भी उन्हें मारा।

सोमनाथ के मन्दिर में सीसे से मढ़े हुए सागवान के ५६ स्तम्भ थे। मूर्ति एक अँधेरे कमरे में थी। मूर्ति पाँच हाथ लम्बी थी। इतनी भूमि के बाहर और दो हाथ भूमि के अन्दर थी। महमूद ने उस का एक भाग जलवा दिया और दूसरा भाग वह गजनी ले गया। उस से उसने वहाँ जामे मसजिद की द्वार की एक सीढ़ी बनवाई। मूर्ति के कमरे में रत्नजटित दीपको का प्रकाश रहता था। मूर्ति के समीप सोने के ब्रांसियों पदार्थ थे। इस मन्दिर में २० लाख दीनार में अधिक का माल महमूद के हाथ लगा। पचास महमूद से अधिक हिन्द वहाँ मारे गए।

महमूद की मृत्यु और उम के पश्चान्—सन १०३० में गजनी में महमूद का दहान्त हुआ। उम के पुत्र-पौत्र परस्पर लड़ भिड़ कर शक्तिहीन होते गये। अन्य देशों के विजय करने की शक्ति उन में नहीं थी। वे तो अपने राज्य की रक्षा में भी असमर्थ होगे। अथाह धनराशि उन की सब शक्तियों को जीण करने के लिए पयात्र थी।

महमूद पक्का मुसलमान था। वह शरवीर भी था। उन राज्य बढ़ाने की इतनी लालसा न थी जितनी बल-मजूर करने की। वह भारतीय लोगों की निबलता को जान गया था और स्वयं युद्ध-विद्या की नीति जानता था। महमूद ने

यह सत्य रसिया के मन भागो में फैल गया था। प्रसिद्ध कवि गिरदौसी उसी के काल में हुए हैं। महमूद के कत्ते पर उस ने शाहनामा लिखा। कहते हैं कि सुलतान ने प्रतिज्ञा की थी कि शाहनामा के प्रत्येक पद्य के लिए वह सोने की एक अशरफी देगा। जब शाहनामा समाप्त हो गया तो सुलतान ने प्रत्येक पद्य के बदले चाँदी का एक सिक्का गिनवा कर भेज दिया। जब महमूद के दूत धन ले कर वहाँ पहुँचे, तो लोग कवि के मृतक देह को बाहर ले जा रहे थे।

अयुरिहो अलबेस्नी—अलबेस्नी खीवा का रहने वाला था। वह बड़ा बुद्धिमान और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। महमूद ने उसे कैद कर लिया था। महमूद को भय था कि जब वह भारत में जायगा तो अलबेस्नी उस राज्य में उन्ट फेर कर देगा। अतः वह अलबेस्नी को भी अपने साथ भारत ले आया। यहाँ उसने अलबेस्नी को छोड़ दिया। यह विद्वान उस वर्ष तक भारत में रहा। उसने यहाँ संस्कृत विद्या का अध्ययन किया। भारत में जाते हुए संस्कृत के अनन्त ग्रन्थों का अपने साथ लाने में गया।

अलबेस्नी ने जो कुछ ग्रन्थों को अपने साथ लाया, वे सब एक सक्कान में रहने लगे। उहाँ ने उन ग्रन्थों को बार-बार इस सक्कान में बाहर निकाल कर पढ़ा। वह सोचता था कि अलबेस्नी किस प्रकार की सारा ज्ञान वह अपने प्रिय मित्रों को देगा। अतः तीनों बड़े-बड़े ग्रन्थों का रस-काद-काद से पढ़ा। उसने जो कुछ संस्कृत में है, इस ग्रन्थ में वह अनुवाद करके देगा। उसने जो कुछ उल्लेख करता है, वह सब उस कहते हैं कि अलबेस्नी के उल्लेखों के विद्वान ज्ञान में एक अवस्था है जो कि अलबेस्नी ने नहीं करते। उसने अट रह पुराने का लोकोपयोग है। अतः जो जो ज्योतिष शास्त्र का वह बहुत उल्लेख करता है।

महमूद के आक्रमणों का भारत पर प्रभाव—यह लिखा जा चुका है कि महमूद बनसज्जय के लिए ही भारत में आता था। इसलिए उसने यहाँ आकर अपना कोई स्थाई प्रभाव नहीं छोड़ा पर उसके बार-बार के आक्रमणों के कारण, उत्तरीय भारत की सैनिक शक्ति बहुत दुर्बल हो गई। महमूद से पहले भी उत्तरीय भारत में शक्तिशाली कोई एक बड़ा राज्य नहीं था, अब तो रहा-सहा राज्य-बल जाता रहा।

सन ६७७ में तुर्क वंश ने गजनी का राज्य संभाला था। सन् १११७ में इस वंश का अन्त हो गया। ११४० वर्ष में इस वंश के कोई वारह शासक हुए। अन्तिम सुलतान बहरामशाह था। अलाउद्दीनहुसैन गोरी ने सन् १११७ में गजनी ले लिया। बहराम ११ भाग कर लाहौर आ गया और ११४६ सन् में यहाँ ही मरा।

मालवे का परमार भोज—जिन दिनों गजनी का महमूद उत्तरीय भारत पर बार बार आक्रमण कर रहा था, उन्हीं दिनों परमार वंश का भोज नाम का एक प्रसिद्ध राजा मालवे में राज्य करता था। उस की राजधानी धारा नगरी थी। उस का राज्य अच्छा विस्तृत था। आस पाम के कई राज्य जीत कर ही उसने अपने राज्य का विस्तार किया था। वह कभी कभी अपने चित्तौड़ के दुर्ग में रहा करता था। भोपाल या भोजपुर का प्रसिद्ध ताल इसी राजा का बनवाया हुआ माना जाता है।

यह राजा स्वयं विद्वान और विद्वानों की बड़ी प्रतिष्ठा करने वाला था। इसी के राज्य में प्रसिद्ध विद्वान उवट ने अपना यजुर्वेद-भाष्य रचा था। भोज अथवा उस के नाम से उस के पण्डितों के बनाए हुए बीस-पचीस उच्चकोटि के संस्कृत ग्रन्थ अब भी मिलते हैं।

इक्कीसवाँ अध्याय गठौर, चौहान और अफगान

गहरवार या गठौर—राठौरो का पुराना नाम गहरवार है। जब गुर्जर प्रतिहार कन्नौज में निर्दल हो गए, तो चन्द्रदेव नाम के एक राठौर नामन्त ने कन्नौज पर आक्रमण करके इसे अपने अधिकार में ले लिया। रातों रात उसने आस-पास के भी कई नगर अपने राज्य में मिला लिए। उसका कुछ काल पश्चान गोविन्द चन्द्र राजा हुआ। वह कन्नौज का बड़ा प्रसिद्ध राजा था। उसका पोता जयचन्द्र था। वह ११५० ई० में कन्नौज का राजा बना। राठौर का राज्य नरें सयुक्त प्रान्त और बिहार तक फैला हुआ था। यह जयचन्द्र था जिसके राज्य अफगान राजा महम्मद गौरी ने नष्ट किया।

अजमेर के चौहान—अजमेर में चौहान वंशाय राजाओं का राज्य था। महम्मद गौरी ने चौहानों को हराकर अजमेर को जीत लिया। विजयनगर के बाद चौहानों का राज्य दिल्ली के तोमर-वंश के राजाओं के अधिकार में आ गया। चौहानों का राज्य विलुप्त कर दिया। इन चौहानों का राज्य अजमेर में था। कहते हैं उसका एक विजयनगर के राजा जयचन्द्र का पुत्र से हुआ था।

दिल्ली के तोमर—कन्नौज पर चन्द्रदेव या उसके पुत्रिक दिल्ली की बड़ी वृद्धि की थी। फिर कई राजा दिल्ली तक दिल्ली एक

साधारण नगर रह गया। ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में तोमर-वंश का दिल्ली पर राज्य था। सन १०४० में दिल्ली का राजा अनन्तपाल ने वर्धा एक बड़ा दुर्ग बनवाया और यहाँ मन्दिर भी बनवाए। उन्हीं मन्दिरों का नोटकर ११६० में उनके पत्थरों से कुतुबमीनार बनाई गई थी।

गोर का शहाबुद्दीन—हिरात और गजनी के मध्य में गोर नाम का एक छोटा-सा राज्य था। उसकी राजधानी फोरोज़गंज थी। वहाँ गयाबुद्दीन मुहम्मद नाम का एक राजा था। उसका छोटा भाई शहाबुद्दीन या मुहम्मद गौरी था। जब गजनी की क्षीण हो गया तो शहाबुद्दीन ने गोर से ही भारत पर आक्रमण आरम्भ किए। शहाबुद्दीन ने गजनी का राज्य भी ले लिया। गजनी की धन, सम्पत्ति वह सब लूट ले गया। गजनी के मुन्दा भवनों को उसने धराशायी कर दिया। वह गजनी जिसका सौन्दर्य सारे एशिया में सुविख्यात हो गया था अब एक साधारण नगर रह गया। इसके पश्चान् मुहम्मद गौरी ने मुल्तान पर आक्रमण किया। फिर उसने भटिण्डे का दुर्ग ले लिया।

शहाबुद्दीन और पृथ्वीराज का पहला युद्ध—जब शहाबुद्दीन भटिण्डे के दुर्ग को ले चुका तब अजमेर का चौहान राजा पृथ्वीराज शहाबुद्दीन को रोकने को आगे बढ़ा। उसने कई हिन्दू राजाओं की सहायता प्राप्त की। वह यानेनर के समीप नराइन के पास पहुँचा। वहीं उनका शहाबुद्दीन से युद्ध हुआ। शहाबुद्दीन बुरी तरह घायल हुआ और गणक्षेत्र से भाग गया। लाहौर आए उसने अपनी चिकित्सा कराई और फिर गजनी चला गया। यह घटना सन ११६१ की है।

इस विजय के पश्चान् पृथ्वीराज ने भटिण्डे के दुर्ग को जा

धेरा। उनका हाकिम जियाउद्दीन १३ मान के पश्चान् परास्त हुआ। मुहम्मद गौरी अपनी पराजय भूला नहीं। अपने घर पर उसने भारी तैयारी की। सन् ११६२ में एक लाख बीस हजार सेना लेकर वह फिर भारत आया। धानेसर के पान् पृथ्वीराज से उस का युद्ध हुआ। पृथ्वीराज हार कर कैद हुआ और मारा गया। इस विजय से मुहम्मदगौरी ने अजमेर तक का प्रदेश अपने राज्य में मिला लिया। पंजाब तो पहले ही मुसलमानों के अधिकार में जा चुका था।

पृथ्वीराज का पुत्र गोविन्दराज था। उसने शहाबुद्दीन की अर्धानता स्वीकार कर ली। शहाबुद्दीन ने उसे अजमेर की गद्दी पर बिठा दिया। पृथ्वीराज के भाई हरिराज को गोविन्दराज की इस क्रिया पर बड़ा क्रोध आया। उसने गोविन्दराज से अजमेर का राज्य छीन लिया।

कन्नौज पर चढ़ाई—शहाबुद्दीन का तुर्क जाति का एक गुलाम और सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक था। उसने सन् ११९३ में अजमेर वालों से फिर दिल्ली लीन ली। तभी में दिल्ली भारत में मुसलमानों का राजधानी हुई। हरिराज ने कुतुबुद्दीन से युद्ध किया पर अन्त में उसे अजमेर छोड़ना पड़ा और इस प्रकार अजमेर भी स्थिर रूप में मुसलमानों के राज्य में जा मिल गया। सन् ११९४ में कुतुबुद्दीन ने कन्नौज पर चढ़ाई की। चन्देल राजा चन्द चन्दावर के युद्ध में परास्त हुआ। इस विजय से अजमेर तक का प्रदेश मुसलमानों के अधिकार में चला गया।

गुजरात पर आक्रमण—इस के बाद में सन् ११९५ में कुतुबुद्दीन ने गुजरात पर चढ़ाई की। इस चढ़ाई में उस का मुँह की खानी पड़ी। गुजरात वालों ने मंगो की सहायता से उस पर

आक्रमण कर दिया। वह ध्वरा कर भागा और अजमेर आ गया। उसने मुहम्मदगोरी को दूत भेजे। मुहम्मद गोरी ने एक बड़ी सेना लेकर गुजरात के राजपूतों को डण्ड देने के लिए निकला। आवू के समीप एक युद्ध में बुरी तरह घायल होकर शहाबुद्दीन लौट गया। अगले वर्ष कुतुबुद्दीन ने फिर गुजरात पर चढ़ाई की और आवू के समीप ही उसने विजय प्राप्त करके गुजरात को लूटा।

सन् १२०३ में कुतुबुद्दीन ने कालिञ्जर पर चढ़ाई की। वहाँ राजा परिमर्दन बड़ी वीरता में लड़ा। उसने दो सानन्त थे आल्हा और उदल। वे दोनों बड़े वीर थे। उन्होंने घोर युद्ध किया था, पर अन्त में राजा हार गया।

बंगाल-विजय—मुहम्मद गोरी का एक सेनापति मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी था। उसने ११९७ में बिहार पर आक्रमण किया। वहाँ पालवश का राज्य था। वह बश अत्यन्त निबल हुआ गया था। बिहार में उन दिनों बौद्धमत का कुछ-कुछ प्रचार होता था इसी कारण वहाँ की प्रजा भी हतोत्साह थी। केवल २०० सवारों की सहायता में उसने बिहार पर अधिकार कर लिया। नालन्दा आदि के विश्वविद्यालय उसी प्रान्त में थे वहाँ का बहुमूल्य साहित्य खिलजी के सैनिकों ने नष्ट-ध्वस्त कर दिया। जिस प्रकार सिक्न्दरिया का समार-प्रसिद्ध पुस्तकालय ग्रीकों ने नष्ट कर पुराने इतिहास और विज्ञान के लक्षों अमूल्य ग्रन्थ जल दिए थे उसी प्रकार बख्तियार ने नालन्दा आदि के पुस्तकालयों को नष्ट कर के भारतीय सभ्यता के लाज्यों ग्रंथों को अग्नि की भेंट कर दिया। इन विश्वविद्यालयों में रहने वाले महान् बौद्ध भिक्षु कत्त किए गए।

इस के पश्चात् सन् ११९९ में बाल्बार ने १८ नवम्बर लेकर मेत-वश के राजा लक्ष्मण सेन की राजधानी नदिया पर चढ़ाई की। राजा नगर छोड़ गया, मुसलमानों ने नदिया को भरपूर रूढ़ा। बाल्बार ने गौरी को अपना केंद्र बनाया और वहाँ अनेक मस्जिदें बनवाई।

गौरी की मृत्यु—इस प्रकार बाल्बार उत्तर-भारत मुसलमानों के राज्य में चला गया। राजपूतों की रही-सही शक्ति भी दिन प्रति दिन कम होती गई। गौरी का स्थापित किया हुआ मुसलमानी राज्य भारत में स्थायी होता गया। मुहम्मद गौरी की मृत्यु सन् १२०६ में हुई। कुतुबुद्दीन तब भी भारत में उस का नायब था।

बार्लंबी अध्याय

गुलाम-वंश सन् (१२०६-१२९०)

कुतुबुद्दीन (सन् १२०६-१२१०)—शहबुद्दीन मुहम्मद गौरी की मृत्यु के समय कुतुबुद्दीन भारत में उसका प्रतिनिधि शासक था। वह गुलामवंश का एक ब्राह्मण सेनापति के काम में उस की उन्नता की शक्ति को अपने स्वामी की सहायक पार्षद सन् १२०६) कुतुबुद्दीन एक स्वयं भारत का वादशह बन बैठे वह उगार हृदय और व्यापक प्रिय था। उस ने दिल्ली में एक मस्जिद बनवाई। कुतुबुद्दीन का बनावत भी उसी ने करवाने किया था। पर कई ऐतिहासिक कहते हैं कि कुतुबुद्दीन ने यह मीनार बनवाई थी और कुतुबुद्दीन ने राजा भी समर्पित कर के

अपना नाम दे दिया। कुतुबुद्दीन दूरदर्शी व्यक्ति था। उसने अपनी शक्ति अपने राज्य के दृढ़ करने में लगाई। उस ने गुलाम वंश के कई ऐसे विवाह सम्बन्ध जोड़े कि जिस से यह वंश प्रबल हो गया। सन् १२१० में वह घोड़े से गिर कर मर गया।

शमसुद्दीन अलतमश (सन् १२११-१२३६)—कुतुबुद्दीन के पुत्र का नाम आरामशाह था। कुतुबुद्दीन के बाद वह गद्दी पर बैठा, पर बहुत दिन राज्य नहीं कर सका। बदायूँ के सूबेदार अलतमश ने उसे गद्दी से उतार कर स्वयं राज्य ले लिया। उस समय मुसलमानों ने भारत में पृथक्-पृथक् अपने राज्य स्थापित कर लिए थे। ये राज्य थे लाहौर, दिल्ली, सिन्ध और बिहार।

गद्दी पर बैठते ही अलतमश ने लाहौर के सूबे पर अपना अधिकार कर लिया।

बौद्ध मंगोल चङ्गेजखॉ—उत्तर-पश्चिमी चान में मंगोल नाम की एक जाति रहती थी। मंगोल लोग बौद्ध थे। चङ्गेजखॉ नाम का एक वीर उनमें उत्पन्न हुआ। वह बौद्ध होते हुए भी बड़ा रणरसिक था। उसने मंगोल जाति को संगठित किया और अनेक विजय करके मंगोलों का एक विशाल साम्राज्य बना दिया। योरुप के अनेक भाग उसके राज्य में मिल गए। उत्तरीय चीन और तुर्किस्तान को जीतकर वह शाह जलालुद्दीन का पीछा करता हुआ भारत में आ पहुँचा। उसने अफगानिस्तान को उजाड़ दिया और हिरात तथा पेशावर ले लिए। अफगानिस्तान वालों ने जिस निर्दयता से भारत के कई भाग उजाड़े थे, उससे अधिक क्रूरता से उसने अफगानिस्तान को उजाड़ा। क्या वह बौद्धों पर किए गए अत्याचारों का बदला ले रहा था? शाह जलालुद्दीन भागता भागता दिल्ली आ पहुँचा। यहाँ अलतमश ने उसे शरण

नौ, पर चंगेज का भय अल्लमश के मन में भी बैठ गया। चंगेज पहले चाहता था कि उत्तरीय भारत में होकर तिब्बत के मार्ग से अपने देश को लौट जाय, पर शीघ्र ही उसके विचार में परिवर्तन आ गया। यदि वह भारत से होकर जाता, तो भारत का भविष्य रुद्ध और हो जाता। उसके लौटने पर अल्लमश ने सन् १२२५ में बग़ाल ले लिया। तीन वर्ष पश्चात् सन् १२२८ में उसने सिन्ध भी अपने शासन में सम्मिलित कर लिया।

शीघ्र ही उस ने रणथम्भोर, नाँइ और ग्वालियर को भी अपने अधीन कर लिया। मेवाड़ पर भी वह बड़े दल बल के साथ चढ़ा, पर वहाँ उस को हार खानी पड़ी। मालवा के राजपूतों को भी उस ने जीत लिया। सन् १२३४ तक नर्मदा तक का प्रदेश उस के राज्य में आ गया।

सुलताना रजिया बेगम (सन् १२३६-१२४०)—अल्लमश के पुत्रों में बादशाहों के गुण न थे अतः अल्लमश की पुत्री रजिया ने भारत पर राज्य करना आग्रह किया। रजिया में अपने पिता के अनेक गुण थे। उस न अपने पिता के राज्यकाल में ही शासन का अनुभव कर लिया था। वह सरदारों को प्रशस्त कर दरबार में बैठती थी और प्रजाजन को न्याय करने की थी। उस के कई सरदार उस से कुपित रहे। उन सरदारों ने उस के राज्य पर रजिया एक भूल कर देना। एक दिन सुल्तान अल्लमश के अन्तर्मुख हो गया। सरदारों ने विद्रोह कर दिया। रजिया ने इस विद्रोह से विद्रोह शान्त करने के लिये अपने पति के व्यवहार के लिए उस ने एक तुकी सरदार से विवाह कर लिया। सरदार इस पर भी क्रुद्ध हो गए और अन्त में पुनः विद्रोह कर के रजिया और उस के पति दोनों को कैद कर लिया। कैद से भाग हुए दो,

पति-पत्नी जङ्गल में मारे गए । रजिया का राज्यकाल लगभग मात्र तीन वर्ष ही रहा ।

रजिया ही एक ऐसी देवी हुई है जिसे दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । पर पुरुषों की अमानुष कठोरता के कारण इतनी योग्य होती हुई भी वह अपनी मानव यात्रा को निर्विघ्न न समाप्त कर सकी ।

नासिरुद्दीन—रजिया के देहान्त के पश्चान् उस के दो भाई वारी वारी से गद्दी पर बैठे, पर वे नितान्त अयोग्य थे । तब सन १२४६ में उस का तीसरा भाई नासिरुद्दीन बालशाह बना । यह बड़ा दयावान और धर्मात्मा था । ऐसे दयावान बालशाह की उस समय आवश्यकता न थी । उस का सारा राज-कार्य उस का गुलाम बलवन करता था । बलवन के ही कौशल से उसका राज्य दृढ़ हो गया । इसी समय मुगलों ने भारत पर आक्रमण आरम्भ किए । बलवन ने सारे सीमा प्रदेश में दुर्ग बनवाए और इन आक्रमणों से भारत की रक्षा की । बलवन ने राजपूतों के भी कई विद्रोह शान्त किए । इतने में सन १२६६ में नासिरुद्दीन परलोक मिथारा ।

बलवन—सन १२६६ में जब मुलतान नासिरुद्दीन का देहान्त हुआ, तब बलवन ६७ वर्ष का था । स्वामी की मृत्यु के पश्चात् उसने राजगद्दी संभाली । वह एक वीर और दूरदर्शी शासक था । योग्य होने के कारण ही वह भारत का सम्राट् बना । भारत, तिब्बत और मध्य एशिया के अनेकों राजा उस से डरते थे । दण्ड देने में वह दया नहीं करता था । अपने शत्रुओं पर उसने कभी कृपा नहीं दिखाई । अपनी सेना को वह सदा तैयार रखता था ।

बङ्गाल-विद्रोह—मुसलमानी राज्य में एक भारी दंग रहा है । मुसलमानी बालशाह अपने मूवेदारों को म्यायी बना देते थे ।

कैकुवाद्—बलवन अपने पुत्र बगराग्य को बङ्गाल का मंत्री बनाने के लिये भेज चुका था। बगराग्य का पुत्र कैकुवाद् वह बलवन्त और दुष्ट प्रकृति का पुरुष था। भोग-विनाश-सिवाय उसे कुछ आता ही न था। बलवन के बाद वह बादशाह बना। उस के समय में गुलाम राज्य में विद्रोह के निन्दित दिग्गजों लगे। सरदार अपना अपना मन बना रहे थे। बगराग्य स्वयं उसे समझाने के लिए बङ्गाल से आया पर वह पिता के उपदेश में पड़ जा चुका था। ऐसा नीतिहीन बादशाह भला कितने दिग्गज राज्य कर सकता था। खिलजी वंश का जलालुद्दीन नाम का एक सरदार था। उसने कैकुवाद् का बंधन कर शत्रु को यमुना में बहा दिया। मन् १२६० में कैकुवाद् की मृत्यु के साथ ही गुलाम वंश का शासन समाप्त हो गया।

तेईसवाँ अध्याय

खिलजी वंश (१२९०—१३२०)

जलालुद्दीन खिलजी (मन् १२६०—१२९६)—
७० वर्ष की आयु में जलालुद्दीन दिल्ली का मुल्तान बना। वह बड़ा नीतिज्ञ था। उसे पता था कि उसने अपने स्वामी के मरवाया है, अतः बहुत से सरदार उससे विरुद्ध होंगे। सिंहासनारूढ़ होते ही उसने बहुत सा रुपया सरदारों का बाँटा और अनेक जागीरें भी दीं। इस प्रकार उसने सब सरदारों को अपने पक्ष में कर लिया। जलालुद्दीन ने रणथम्भौर पर चढ़ाई की। वहाँ राजपूत मरने मारने को उद्यत थे ही बहुत रक्तपात होता देख क

अलाउद्दीन (मन् १२६६ — १३१५)— जलालुद्दीन के पुत्र अभी तक जीते थे । किन्तु ही सरदारों की मृत वादशाह के पुत्रों से महानुभूति थी । अलाउद्दीन उन सब न डरता था । पर कुछ सरदारों को उस ने अपनी ओर कर लिया और वह दिल्ली की ओर चल पड़ा । जलालुद्दीन का एक पुत्र दिल्ली का वादशाह बन बैठा था । अलाउद्दीन ने सरदारों को इतना प्रसन्न कर लिया था कि जलालुद्दीन के पुत्र के साथी बहुत थोड़े रह गए । वह भयभीत हो कर मुलतान को भागा और अलाउद्दीन ने बड़ी सज धज के साथ दिल्ली में प्रवेश किया । शनैः शनैः सारे सरदारों ने अलाउद्दीन को वादशाह मान लिया, और वह सन् १२९६ में दिल्ली की राजगद्दी का स्वामी हो गया ।

गुजरात-विजय—सन् १२६७ में अलाउद्दीन ने गुजरात पर आक्रमण किया । अन्हलवाड़े के राजा कर्ण के साथ उस का युद्ध हुआ । राजा युद्ध में मारा गया । राणी कमलादेवी कैद हो गई । अलाउद्दीन ने उसे अपने अन्तपुर में रख लिया । इन्हीं दिनों वादशाह की मना में एक गुलाम प्रविष्ट हुआ जो इतिहास में मालिक काफर क नाम से प्रसिद्ध है ।

मुगल और दिल्ली—मुगल लोगों ने भारत पर आक्रमण करना बन्द नहीं किया था । सन् १२६८ में मुगल दिल्ली पर चढ़ आये । वादशाह ने दिल्ली के बाहर उन से युद्ध कर के उन्हें परास्त किया । इस के पश्चात् अलाउद्दीन ने अपनी उत्तरीय सीमा पर अनेक दुर्ग निमाण कराए । उसने गाजी तुगलक (गयासुद्दीन) को पञ्जाब के दिपालपुर नगर में अपना नायब बनाया । इस प्रकार के प्रबन्ध से इस के जीवन काल तक तो मुगलों के आक्रमण बन्द हो गए ।

मन्त्री भी था। सन १३०६ के लगभग वह दक्षिण की ओर बढ़ा। उस के पास एक बड़ी भारी सेना थी। उस ने पहले राजा कर्ण की पुत्री देवलदेवी को पकड़ा। देवलदेवी बादशाह के पुत्र खिज्जरग्या से ब्याही गई। बादशाह उससे पूर्व स्वयं देवगिरि के रामदेव पर चढ़ाई कर चुका था। अब काफूर ने भी उसे जा घेरा। राजा हार गया, पर बादशाह का आग्रहपत्र स्वीकार करने के कारण बादशाह ने उसे अपना कर-दाता बना लिया। कुछ काल पश्चात् रामदेव मर गया। रामदेव के पुत्र ने स्वतन्त्र होने की चेष्टा की, पर वह एक युद्ध में मारा गया। तब से महाराष्ट्र पर भी मुसलमानों का अधिकार हो गया।

इस के पश्चात् काफूर कुमारी अन्तरीप तक बढ़ा। एक के पश्चात् दूसरा हिन्दू राज्य उस ने ले लिया। दक्षिण की ओर बढ़ ले कर काफूर दिल्ली लौटा। उस के साथ हुए धन को देख कर बादशाह विस्मित हुआ और काफूर प्रधान-मन्त्री बनाया गया।

अलाउद्दीन का साम्राज्य—अलाउद्दीन का साम्राज्य मौर्य, गुप्त या आधुनिक ब्रिटिश साम्राज्य के समान मुट्ठे तो नहीं था, पर था पर्याप्त फैला हुआ। उत्तरी भारत में पंजाब का आधा भाग, राजपूताना और सिन्ध उस ने ले लिए थे। पूर्व में वह बङ्गाल तक पहुँच गया था। दक्षिण में मालवा, गुजरात और सुदूर दक्षिण के अनेक भाग उस ने जीत लिए थे। राजनीति के गम्भीर तत्व न तो अलाउद्दीन जानता था, और नाही उस के मन्त्री। इस लिए उस का साम्राज्य स्थायी न था। उस के जीवन काल में ही इस साम्राज्य में शिथिलता आ गई।

शासन-प्रणाली—अलाउद्दीन जहाँ लूट पर पर्याप्त ध्यान

लगभग एक मास पश्चात् मलिक काफूर मारा गया। बादशाह का एक दूसरा पुत्र था, कुतुबुद्दीन मुबारक। उस ने अपने भाई को राजसिंहासन से हटा दिया और सन् १३१६ में स्वयं बादशाह बन बैठा। कुतुबुद्दीन अत्यधिक विलासी था। अलाउद्दीन की लूट की सम्पत्ति ने उसे शक्तिहीन कर दिया था। भोग-विलास की लत में पड़ा हुआ बादशाह दिल्ली के अमीरों के घरों पर नाच-रंग देखा करता था।

देवगिरि के राजा से युद्ध—अवसर ताड़ कर देवगिरि का राजा हरपालदेव स्वतन्त्र हो बैठा, परन्तु वह अपनी सेना पूर्ण रूप से तैयार न कर सका था कि बादशाह ने स्वयं उस पर चढ़ाई की और उसे हरा कर मरवा दिया। इस क्षणिक विजय के कारण बादशाह पहले की अपेक्षा और भी अधिक विलासी हो गया। वह नीच-प्रकृति के लोगों से मेल रखता था। ऐसा ही एक व्यक्ति खुसरो था। उसे बादशाह ने मन्त्री बना लिया था। इसी खुसरो ने बादशाह को मार डाला और सिंहासन पर स्वयं बैठ गया।

नासिरुद्दीन खुसरो—खुसरो मुसलमानों पर अत्याचार, कुरान का अपमान और मस्जिदों का तिरस्कार करता था। मुसलमान सरदार उस से दुर्खा हो गए। ऐसी अवस्था में पंजाब के दिपालपुर के नायब गयामुद्दीन तुगलक ने खुसरो पर चढ़ाई की। युद्ध में खुसरो मारा गया। तब गयामुद्दीन दिल्ली के राज्य का स्वामी बना।

अलाउद्दीन का बनाया हुआ साम्राज्य पाँच ही वर्ष में अब तुगलक वंश की अधीन हो गया। इस पाँच वर्ष के अन्तर में अनेक राजपूत राजाओं ने अपनी अपनी स्वतन्त्रता फिर स्थिर कर ली।

ज्योतिष, दर्शन आदि सब विषय उसने देखे थे। वह काव्यरमिक और स्वयं एक कवि था। मुल्ला लोगो को राज्य में वह दखत नहीं देने देता था।

पर दोष भी उसमें कम न थे। वह अपनी बात पर बड़ा हठ करता था। जो बात एक बार करना चाहता था, उसे कर के ही छोड़ता था। उसका दण्ड-नियम कूरता में भरा हुआ था। विद्वान् होते हुए भी वह राजनीतिक रूप में गहरा देखने वाला नहीं था—अदूरदर्शी था। मन में जो लहर उठती उसे वह कार्य में परिणत करना चाहता था। इस प्रकार उसने कई ऐसी बातें की, जो उसके दुःख का कारण बन गईं। उस को क्रोध भी अधिक आ जाता था, इस लिए उस के समीप रहने वाले उस से बहुत डरा करते थे।

राजधानी का बदलना—बादशाह के प्रारम्भिक वर्ष युद्धों में बीते। उसने अपने साम्राज्य को बहुत बढ़ किया। उस से पहले किसी मुसलमान शासक का राज्य इतना विस्तृत नहीं था। उस के साम्राज्य में २३ सूबे थे। उन में से कुछ प्रधान सूबे दिल्ली, लाहौर, गुजरात, मालवा, कन्नौज और देवगिरि आदि थे।

उसका साम्राज्य सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ था। दक्षिण में बहुधा विद्रोह हो जाते थे। बादशाह ने सोचा कि दिल्ली से इतने दूर के प्रदेशों का सँभालना कठिन है। उसने देवगिरि को अपना केन्द्र स्थान बनाना चाहा। एक दृष्टि से तो देवगिरि ऐसा नगर था, जो भारत का केन्द्र बन सकता था। मुहम्मद तुगलक ने आज्ञा की कि उस के राजकर्मचारी देवगिरि को चले। इस के साथ उसने एक भारी भूल की। उसे अपने समृद्ध नगर-वासियों से कुछ प्रेम सा था। उसी प्रेम में उसने उन को भी आज्ञा दी कि

के बराबर था। बादशाह ने अगली बात नहीं सोची। सहनों पुरुष नकली सिक्के बनाने लग पड़े। व्यापारियों को सन्देह हो गया। व्यापार बन्द होने लगा। अपनी साख बचाने के लिए बादशाह ने आज्ञा की कि ताँबे के सब सिक्के के बदले सोने-चाँदी के सिक्के राजकोष में दे दिए जाएँ। ऐसा होते ही राजकोष खाली हो गया। लोग नकली सिक्के के बदले में भी सोने चाँदी के सिक्के ले गये। औषध उलटी पड़ी। निवृत्ति के स्थान में रोग आगे से भी कहीं बढ़ गया।

राज्य-प्रबन्ध—बादशाह ने हिन्दू प्रजा पर अलाउद्दीन की कठोरता स्थिर रखी। वह भी उन्हें निर्धन करके अपने आधिपत्य में रखना चाहता था। किसानों पर उसने भारी टैक्स लगाए। दूसरे टैक्स भी बहुत बढ़ा दिए।

एक ओर जहाँ अत्याचार की सीमा हो चुकी थी, दूसरी ओर उसने अनेक मदरसे और औषधालय स्थापित कराए। इन में दवाई बिना मूल्य मिलती थी। अपराध करने पर मुल्ला लोगों को भी दण्ड मिलता था। विदेशियों का बादशाह मान करता था। उसके दरबार में चीनी, तुर्की और फारसी विद्वान विद्यमान थे। दुर्भिक्ष के समय बादशाह ने लोगों की पर्याप्त सहायता की थी। कहते हैं उसने सती की प्रथा रोकने का भी यत्न किया था।

विद्रोह—अब बादशाह को अपनी भूलों का फल मिलना आरम्भ होने लगा। उसकी क्रूरता का कारण लोगों के मन अन्दर ही अन्दर जल रहे थे। धीरे धीरे सभी स्थानों पर उसके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हुआ। पहले भाबर स्वतन्त्र हुआ। फिर सन् १३३७ में बङ्गाल भी साम्राज्य से निकल

कर उस ने भारत पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया। सन् १३६८ में ७० वर्ष की आयु में वह समरकन्द से चला। मार्ग के नगर और ग्राम उस ने जला दिए। जन-संहार का तो कहना ही क्या है। तैमूर जहाँ से गुजरा, वहाँ कत्ले आम कराता गया। न जाने कितने लाख स्त्री-पुरुष उस ने कत्ल कराए। पञ्जाब की भूमि उस के भय से काँप उठी। दिसम्बर में वह पानीपत पहुँच गया। मार्ग में उस ने एक लाख कैदी बनाए थे। यहाँ उस ने उन सब को कत्ल करा दिया। उसे भय था कि युद्ध के समय ये कैदी शत्रु दल में मिल जायँगे। तैमूर के पास कोई एक लाख के लगभग सेना थी। वह दिल्ली पहुँच गया।

उधर महमूद तुगलक लगभग पचास सहस्र सेना के साथ उस का सामना करने के लिए बाहर निकला। तैमूर को विजय हुई। बादशाह महमूद रणक्षेत्र से भाग गया। तैमूर ने दिल्ली में प्रवेश किया। तीन दिन तक तैमूर के सिपाही दिल्ली को लूटते रहे। लाखों स्त्री-पुरुष कत्ल हुए। दिल्ली की सारी सम्पत्ति तैमूर ने बटोर ली। दिल्ली में मेरठ और वहाँ से हरिद्वार होता हुआ तैमूर समरकन्द को लौट गया।

आक्रमण के पश्चात्—दिल्ली की बादशाहत जो पहले ही अस्त व्यस्त दशा में थी अब सर्वथा लीग हो गई। दिल्ली का वैभव, दिल्ली की पहली सी शान अब कहाँ थी। वन का तो वहाँ नाम भी न था। ऐसी दिल्ली के राज्य का अब कौन मान सकता था ? दिल्ली राज्य की सीमा दिल्ली और आगरा तक ही रह गई थी। तैमूर चला गया। दिल्ली में जो अमावारण नर संहार हुआ था, उस की दुःगन्धि के कारण वहाँ भयङ्कर महामारी फैल गई।

1

पर बल देते थे। इन का सम्प्रदाय मथुरा, गुजरात और बम्बई में बहुत फैला।

चैतन्य—चैतन्य महाप्रभु का नाम बङ्गभूमि के वच्चे वच्चे जानते हैं। चैतन्य का जन्म सन् १४८५ में हुआ। चैतन्य भी वैष्णव और कृष्णोपासक थे। जात-पात के वे भी कट्टर विरोधी थे। अनेक नीच जाति के मनुष्य उन के शिष्य बने। उन की कृपा से बंगाल में वैष्णव धर्म का अछड़ा प्रचार हुआ।

इन सब धार्मिक गुरुओं ने जात-पात पर पूरा कुल्हाड़ा चलाया और भक्ति-मार्ग का भरपूर उपदेश दिया। जो नीच जाति के लोग धड़ाधड़ मुसलमान हो रहे थे, वे इन के उपदेशों में हिन्दू ही रहे। यही नहीं, इन की असीम भक्ति के प्रभाव से अनेक मुसलमान भी इन के शिष्य हो गए। दूमरी और भक्ति-धारा का प्रवाह बहा कर इन्होंने धर्म को सरल कर दिया। कठिन यज्ञ जो मुसलमानों राज्य में असम्भव थे, लोगों को आकर्षित नहीं कर सकते थे। इस लिए भक्ति के मार्ग द्वारा ईश्वर-प्राप्ति का मन्त्र चल गया। हिन्दुओं में अपने धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ी। संस्कृत विद्या का हास तो हुआ, पर हिन्दू धर्म बच गया।

सत्ताईसवाँ अध्याय

मुगल-साम्राज्य

पुराने मंगोल ही मुगल नाम से पुकारे जाते हैं। चंगेजखान के कुछ काल पश्चात् मंगोल लोग मुसलमान हो गए थे। तैमूर भी वंश का था। मुगल साम्राज्य के टूटने पर उस की अनेक

१४८२ में हुआ। सन १५०६ में उस का अभिषेक हुआ। मेवाड़ के महाराणाओं में से वह सब में अधिक प्रतापी हुआ है। वह अपने समय का सब में प्रबल हिन्दू राजा था। महाराणा ने गुजरात के सुलतानों और सुलतान इब्राहीमलोदी से कई युद्ध किए थे। इब्राहीम के साथ उस का युद्ध सन १५१७ में खातोली ग्राम के पास हुआ। बादशाह भाग गया और राजकुमार कैद हो गया। इस युद्ध में महाराणा का बाया हाथ कट गया था और घुटने पर तीर लगने के कारण वह लगडा हो गया था।

महाराणा सांगा और बाबर—बाबर महाराणा के बल को जानता था। इस लिए महाराणा के साथ युद्ध करने से पहले उसने अपनी शक्ति को एकत्र करना ठीक समझा। बाबर ने ग्वालियर आदि कई दुर्ग अपने अधिकार में कर लिए। महाराणा सांगा भी आगे बढ़ा। बाबर स्वयं लिखता है कि महाराणा के वेग का कोई ठिकाना न था। जगभर में वह कहीं का कहीं पहुँच जाता था। महाराणा ने पहले बयाना ले लिया। फरवरी सन १५२७ को बाबर आगरा के पास अपनी सेना एकत्र कर रहा था। आसपास के जल के स्थानों की रक्षा का वह प्रबन्ध कर लेना चाहता था। फरवरी २२ सन १५२७ को बाबर का सेनापति खानवा तक आ पहुँचा। महाराणा ने उस पर आक्रमण कर दिया। बाबर ने भी अपने सेनापति की सहायता के लिए बड़ी सेना भेजी। राजपूतों ने युद्ध जीत लिया। बाबर के कई बड़े बड़े अफसर मारे गये। बाबर अपनी तोपों को भी साथ ला रहा था।

महाराणा की तीव्र गति से मुगल बड़ा घबराते थे। बाबर स्वयं लिखता है—‘मेरी सेना के छोटे बड़े सभी भयभीत हो रहे थे।’ बाबर बड़ा बेचैन था। उसने अनेक पाप किए थे। उसने सोचा

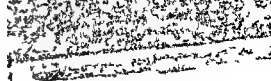
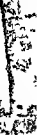
आश्चर्य की बात है कि हुमायूँ अन्ध होने लगा और बाबर का रोग अधिक होता गया। २६ दिसम्बर सन १५३० को आगरे में बाबर की मृत्यु हुई।

बाबर को अपने राज्य के प्रबन्ध करने का अधिक समय नहीं मिला। वह युद्धों में ही लगा रहा। उसने अपने अफसरों को कई जागीरे दीं और हिमालय से मालवा तक तथा काबुल से बंगाल तक अपने राज्य का विस्तार किया।

हुमायूँ (सन् १५३०-१५५६)—अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् हुमायूँ राज-सिंहासन पर बैठा। हुमायूँ के तीन भाई और थे—कामरान, हिन्दाल और मिर्जा अमकरी। मरते समय बाबर ने हुमायूँ से कहा था कि अपने भाइयों को कष्ट न देना। अनेक दुःख सहन करके भा हुमायूँ ने अपने पिता की यह इच्छा पूरी की। कामरान पंजाब और काबुल का सूबेदार था और हिन्दाल और अमकरी भारत में ही थे।

कामरान हुमायूँ से बड़ा दुःखी था। इस दुःख के कारण उसने हुमायूँ के भाग में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न कर दीं। हुमायूँ का सना का बड़ा आवश्यकता था परन्तु वह काबुल की ओर से कोई सहायता नहीं कर सकता था। कामरान काबुल में स्वतन्त्र हो गया।

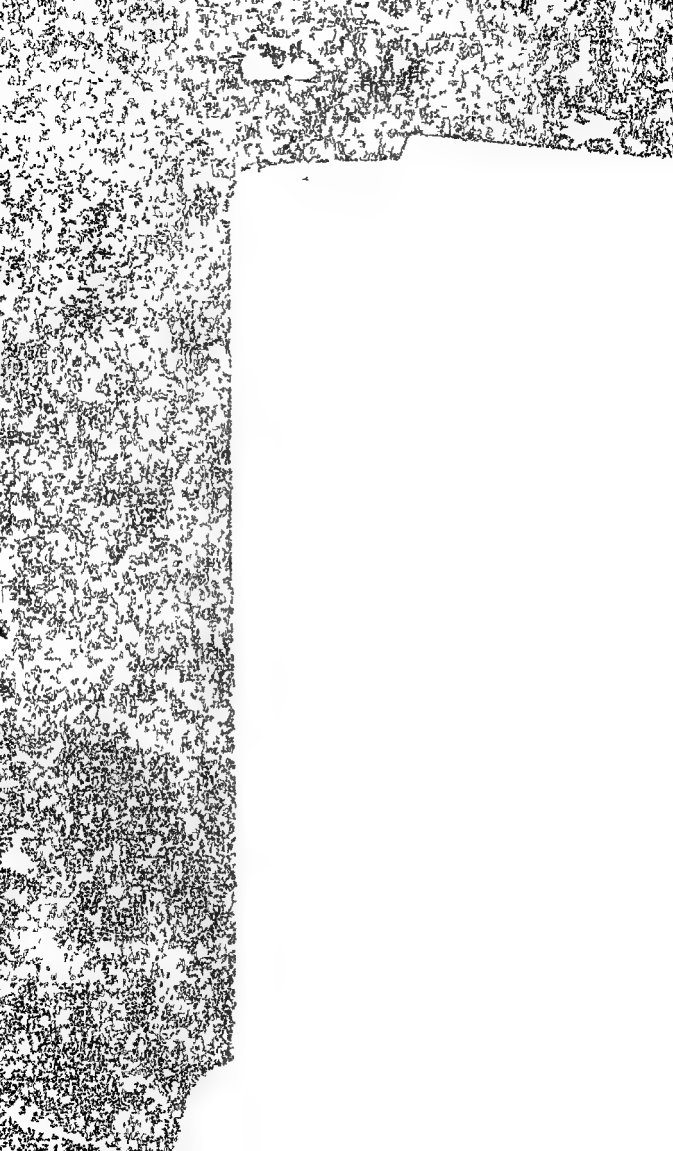
अफगानों में युद्ध—ग़ारा के युद्ध में परास्त हो कर अफगान शान्त नहीं हुए। सन् १५३१ में महमूद लोदी की अध्यक्षता में उन्होंने लखनऊ के समीप एक युद्ध किया। इसमें अफगानों की हार हुई। इस के पश्चात् अफगान बिहार के शासक शेरशाह के झण्डे तले एकत्र हुए। इस शेरशाह ने १५३२ में हुमायूँ की अधीनता मान ली।







हिन्दूपति महाराणा प्रताप



ने जो कैद कर के ४० वर्ष की आयु में सन् १८५६ में
ने अपना राज्याभिषेक किया।

अंग्रेजों की नीति में भेद—अकबर ने हिन्दुओं को
समस्त का स्वतन्त्रता प्रदान की थी। और अंग्रेजों ने
हिन्दुओं को अपने दरबार से निकाला, मन्दिरों
पर मसजिदें बनवाई, हिन्दू पाठशालाएँ
हिन्दुओं के धर्म प्रचारकों और साधु संन्यासियों
से रोक दिया। सहस्रों लाखों हिन्दुओं को बल
वशात् हिन्दू धर्म छोड़ देने वालों को
हिन्दुओं के त्योहार बन्द किए और जजिया
अकबर अपने मित्रों से कपट नहीं
करके हिन्दुओं से भी कपट कर जाना था।
अकबर ने हिन्दुओं से भी कपट कर जाना था।

अकबर की नीति में भेद—अकबर ने हिन्दुओं को
समस्त का स्वतन्त्रता प्रदान की थी। और अंग्रेजों ने
हिन्दुओं को अपने दरबार से निकाला, मन्दिरों
पर मसजिदें बनवाई, हिन्दू पाठशालाएँ
हिन्दुओं के धर्म प्रचारकों और साधु संन्यासियों
से रोक दिया। सहस्रों लाखों हिन्दुओं को बल
वशात् हिन्दू धर्म छोड़ देने वालों को
हिन्दुओं के त्योहार बन्द किए और जजिया
अकबर अपने मित्रों से कपट नहीं
करके हिन्दुओं से भी कपट कर जाना था।
अकबर ने हिन्दुओं से भी कपट कर जाना था।

सोच-विचार कर उसे आसाम विजय करने भेज दिया। वहाँ का जल वायु उसे अनुकूल न बैठा। कुछ देर रोगी रह कर मीर जुमला सन् १६६१ में वहीं मर गया।

छत्रसाल (सन् १६५०—१७३३)—राजा छत्रसाल बुन्देल खंड का राजा था। वह प्रायः महोबे में रहा करता था। उस के पिता चपतराय ने औरङ्गजेब को राज्य प्राप्त करने में बड़ी सहायता दी थी। बादशाह चपतराय से भी द्वेष करने लगा। कई युद्ध हुए। सन् १६६४ में एक युद्ध में चपतराय मारा गया। छत्रसाल ने शिवाजी और पेशवा के साथ मित्रता कर ली। बुन्देला सरदार छत्रसाल अपने स्वतंत्रता प्रेम के लिए अमर हो गया है।

सतनामी विद्रोह—किसी सरकारी सिपाही ने एक सतनामी का अपमान किया। सतनामी सम्प्रदाय के लोग निस्पृह और तपस्वी थे। वे नारनौल के आस-पास रहते थे। उन्होंने बादशाह के विरुद्ध विद्रोह किया। कई बार शाही सेना को उन्होंने ने पछाड़ दिया। अन्त को बड़ी कठिनता से बादशाह वह विद्रोह शान्त कर पाया। २००० के लगभग सतनामी मारे गए।

धार्मिक मिक्ख मेनिक योद्धा बन गए—सन् १६०७ में जहाँगीर ने सिक्खों के गुरु अर्जुनदेव को मरवा डाला था। तब से सिक्खों के अन्दर एक अग्नि जलनी आरम्भ हो गई थी। शाहजहाँ के प्रशान्त राज्य में वह अग्नि बढी नहीं। परन्तु औरङ्गजेब की नवीन वर्मान्विता ने उस अग्नि को बहुत चमका दिया। सन् १६७५ में औरङ्गजेब ने नवम गुरु तेगबहादुर को दिल्ली बुलाया और उन पर एक मुकद्दमा चलाया। गुरु जी पर

जिस समय औरंगजेब मुल्तान की मूर्तियाँ तुड़वा रहा था, उस समय वहाँ से कई मूर्तियाँ सेना लाई गई और वहीं उन की प्रतिष्ठा की गई। बादशाह को यह बात ओर भी दुःख लगी।

इतने में औरंगजेब ने जजिया जारी कर दिया। चारों ओर के हिन्दू तंग आ गए। साम्राज्य में कोलाहल मच गया। महाराणा राजमिह ने बहुत मोच विचार कर एक पत्र बादशाह को लिखा— ‘आप के पूर्वज स्वर्गीय अकबरशाह ने २२ वर्ष न्याय से शासन किया। इस प्रकार जहाँगीर ने २२ वर्ष प्रजा की रक्षा की। प्रसिद्ध शाहजहाँ ने भी ३२ वर्ष नेकी से राज्य किया। आप के पूर्वजों की भलाई के कारण ही उन्हें सर्वत्र विजय प्राप्त हुई। अब आप के समय कई सूत्र आप की अधीनता से निकल गए हैं, प्रजा कगाल हो गई है और दुःख बढ़ रहे हैं। कगाल प्रजा पर कर लगाना बादशाह का बड़ापन नहीं है। आपका जजिया न्याय और सुनौति के विरुद्ध है। यदि आपने रुपया लेना है तो मुझ से लें। आप के मन्त्रियों ने आप को उचित सम्मति नहीं दी।’

इस पत्र को पढ़ कर बादशाह बहुत विगड़ा मवाद पर चढ़ाई अब निश्चित होगई। सन् १६७८ में बादशाह एक बड़ी सेना के साथ अजमेर की ओर चल पड़ा। १२ दिन में वह दिल्ली से अजमेर पहुँचा।

बादशाह के प्रस्थान का समाचार पाते ही महाराणा ने अपने कुमार तथा अन्य सामन्त सरदार दरबार में बुलाए। सब सरदारों ने युद्ध के उपायों पर अपनी अपनी सम्मति दी। अन्त में पुरोहित गरीबदास बोला। बादशाह अत्यन्त बलवान है। इसलिये उस

1

1

बनाई इस से उन्होने यह प्रकट किया कि वे समर्थ गुरु रामदास के शिष्य हैं ।

मृत्यु—सन् १६८० में शिवाजी का देहान्त हो गया ।

शिवाजी के काम का फल—सारा महाराष्ट्र देश एकत्र हो गया । दक्षिण के हिन्दुओं को अपना एक सुदृढ़ रक्षक मिल गया । संस्कृत विद्या का प्रचार बढ़ने लगा । गो, ब्राह्मण की रक्षा होने लगी ।

हिन्दुओं में बड़े बड़े शूर उत्पन्न होने लगे । शिवाजी ने अपना जहाजी वेड़ा भी बनाया और राज्य का प्रबन्ध अत्यन्त सुन्दर रूप से किया ।

छत्रपति संभाजी (सन् १६८०-१६८६)—संभाजी छोटी अवस्था से ही व्यसनी हो गया था, फिर भी उसमें अपने पिता की वीरता थी । सन् १६८३ में औरङ्गजेब ने दक्षिण जीतने के लिए बड़ी सेना एकत्र की । संभाजी पुर्तगीजों से लड़ कर उन्हें विजय कर चुका था, उसे बादशाह की चढ़ाई की सूचना मिली । बागलाना स्थान पर मराठों का मुगल सेना से सामना हुआ । मुगल सेना हार गई । बादशाह बीजापुर और गोलकुण्डे को विजय करने चला गया । संभाजी इस विजय से प्रसन्न हो कर व्यसनों में पड़ गया । इस की प्रजा कगाल हो रही थी, कोष खाली था । संभाजी ने राज्य व्यवस्था की ओर ध्यान नहीं किया ।

संभाजी का वध—सन् १६८७ में बादशाह ने मराठों के साथ पुनः युद्ध आरम्भ किया । राजकुमार अकबर संभाजी के पास था । वह तो ईरान की ओर चला गया । बादशाह की सेना से हवीरराव मोहिते का युद्ध हुआ । वह मराठा राज्य का

सन्तान पालन करने में। बन्धुता तथा धर्म का सम्बन्ध।
यदि तब अपने अनिष्टों के लिए तब ही। तब ही।
इस सन्तान पालन के लिए।

बालार्जी विम्वनाथ—

[illegible]

Journal of Management Education 30(6)

$$f_{\text{max}} = 1000 \text{ Hz}$$

4 3 2 1 0 9 8 7 6 5 4 3 2 1 0

6 4 2 5 3 7

Figure 1. The effect of the concentration of the *Agaricus bisporus* spores on the growth of *Agaricus bisporus* on the substrate.

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

भी व्यसनी हो गया और राज्य का मारा भार बाजीराव ऊपर पड़ गया ।

मराठों के चार राज्य—बाजीराव के काल में मराठों के चार राज्य स्थापित हो गए । गायकवाड़ का गुजरात में, होल्कर का इन्दौर में, सिन्धिया का ग्वालियर में और रावोजी भोंसले का मध्य भारत में । ये चारों राजा पेशवा के प्रति अत्यन्त आदर और सम्मान रखते थे । बाजीराव के काल में मराठों ने दिल्ली तक जा कर लूटमार करना आरम्भ कर दिया ।

बालाजी बाजीराव (सन् १७४०—१७६१)—

बालाजी बाजीराव छोटी आयु में ही पेशवा बन गया । वह भी अपने पिता के समान चतुर और बुद्धिमान था । सन् १७४६ में शाहू मर गया । उस का राज्य ४८ वर्ष तक रहा । वह राजा था नाममात्र का । राज्य का वास्तविक संचालन पेशवा ही करता था । अब उस की मृत्यु के पश्चात् पेशवा का अधिकार और भी बढ़ गया । पेशवा के परिश्रम से मराठा राज्य दूर दूर तक फैल गया । मराठा सरदार उत्तर तक आ कर चौथ और सरदेशमुखी प्राप्त करते थे । इस के बदले वे कर देने वालों को न स्वयं लूटते थे, और न औरों से लूटा जाने देते थे ।

सन् १७५६ में अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली में लूट मार की । वह मथुरा तक पहुँचा और उस ने वहाँ सहस्रों हिन्दू कत्ल किए । मराठे अपने आप को उत्तर भारत का अधिकारी समझते थे । अब्दाली के इस कर्म के बदले में सन् १७५८ में मराठा सरदार बाजीराव ने पञ्जाब को अपने अधिकार में कर लिया । वह सिन्ध की सीमा तक पहुँच गया । मराठों के वैभव की यह पराकाष्ठा थी ।

